पूज्य श्री का हुबली प्रवेश

बहिन म.सा. अक्कलकुआ में शिलान्यास

मां बेटे की दीक्षा - चेन्नई

सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

■ वर्ष : 11 ■ ■ अंक : 9 ■ ■ 5 दिसम्बर : 2014 ■ ■ मूल्य : 20 रू. ■

हुबली में प्रतिष्ठा हेतु प्रवेश

पूज्यश्री के साथ बेलुरमठ के अधिपति
श्री निज गुणांनद स्वामीजी

पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते हुबली विधायक
श्री प्रसम अनप्पा

पूज्य श्री का प्रवेश

पू. साध्वी मंडल

सिवांची भवन का मुहूर्त गोलेच्छा परिवार द्वारा

पूज्यश्री से चर्चा करते आर.एस.एस. के
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री मंगलजी

आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

जं तेहिं दायव्वं, तं दिन्नं जिणवरेहिं सव्वेहिं।
दंसण-नाण-चरित्तस्स, एस तिविहस्स उवएसो॥
-आवश्यक निर्युक्ति ११०३

सभी तीर्थंकरों ने जो कुछ देने योग्य था, वह दे दिया है। वह समग्र दान यही है- दर्शन-ज्ञान-चारित्र का उपदेश।

हॉस्पेट नगर में मोकलसर निवासी श्री गिरधारीलालजी शेराजी पालरेचा द्वारा निर्मित श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का भव्य उद्घाटन पूज्य उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में कर्णाटक के राज्यपाल श्री वजुभाई वाला द्वारा ता. 12 दिसम्बर 2014 को होगा।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	03
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	09
5. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	10
6. अमेरिका	मेधावी जैन	11
7. विहार डायरी	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	12
8. स्वाध्याय की सुवास	डॉ. नीलाजंनाश्रीजी म.	16
9. खतरगच्छ के गौरव : पुखराजजी छाजेड़	प्रकाश सी. कानूंगो	17
10. जिनमन्दिर दादावाडी का शिलान्यास संपन्न		18
11. चतुर्भंगी का चमत्कार	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	20
12. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	21
13. समाचार दर्शन	संकलन	22
14. जहाज मंदिर पहेली 102 का उत्तर		46
15. जहाज मन्दिर पहेली-104	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	47
16. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	50

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 9 5 दिसम्बर 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रुपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रुपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1500 रुपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

एक शब्द पर मैं चिंतन कर रहा था।

शब्द था- **मालामाल!**

मैं विचार में पडा। यह शब्द थोडा आकर्षक लग रहा था।

प्रथम क्षण में इस शब्द का जो अर्थ मानस में स्पष्ट हुआ, वह था- मालामाल हो जाना अर्थात् अथाह संपत्ति प्राप्त कर लेना।

यह शब्द लोगों को बहुत भाता है। वे तो आशीर्वाद के रूप में भी यही शब्द चाहते हैं।

हर व्यक्ति मालामाल होना चाहता है। गरीब कोई रहना नहीं चाहता।

पर यह शब्द बहुत गहरा है। यह शब्द अध्यात्म से संबंधित है।

इस शब्द में केवल परिणाम नहीं है। इस शब्द में कारण व कार्य दोनों है। निमित्त और उपादान दोनों है। हेतु और परिणति दोनों का समावेश इस शब्द में है।

इस शब्द में दो शब्द हैं- एक माला, दूसरा माल!

माला हेतु अर्थात् कारण है और माल परिणाम!

अर्थात् माला है तो माल है। माला के कारण माल है। जो माला का काम करेगा, वह माल पायेगा।

इसका अर्थ हुआ- यदि माल चाहते हो तो माला फेरो!

माला एक प्रतीकात्मक शब्द है। वह धर्म का प्रतीक है।

अर्थात् धर्म करोगे तो माल पाओगे। यहाँ माल शब्द का अर्थ भी गहरा है। माल शब्द का वह अर्थ नहीं है, जो संसारी आदमी करता है। यह माल शब्द सोना, चांदी, हीरे, रूपये के अर्थ में नहीं है। क्योंकि इस माल का कोई मूल्य नहीं है। मूल्य परिस्थिति के अनुसार है। घटता बढता रहता है।

माल का अर्थ उस संपदा से है, जो असली संपदा है। जिसे पाने के बाद खोना नहीं होता। जिसका मूल्य किसी भी काल में घटता बढता नहीं। क्योंकि वह अनमोल है।

माल का अर्थ है- आत्म संपदा! उसे पाने का अधिकारी वही है, जिसके हाथ में माला है... जिसके आचरण में धर्म है... जिसके हृदय में जिनाज्ञा का वास है।

गुरूदेव की कहानियाँ
2.

रोहिणेय चोर

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

राजगृही नगरी की यह कहानी है। 2500 वर्ष पूर्व उस नगर पर श्रेणिक राजा का राज्य था। उसी नगर में लोहखुर नामक चोर भी रहता था। वह चौर्यकला में बहुत होशियार था। राजा ने उसे पकड़ने का भरसक प्रयास किया, किन्तु वह इतना चकोर था कि वर्षों बीत गये पर पकड़ में नहीं आया।

उसके एक रोहिणेय नामक लड़का था, वह अपने बाप से सवाया था।

लोहखूर बूढ़ा हो गया, अतः चोरी करने अकेला रोहिणेय ही जाता था। जब पिता ने देखा कि अब मेरे शरीर की हालत बिगड़ती ही जा रही है तो उसने पुत्र को बुलाया और शिक्षा देने लगा- देख बेटा! मैं अब बहुत थक गया हूँ और अब मेरे शरीर का कोई ठिकाना नहीं है। तुम्हारे जैसे चालाक पुत्र को पाकर मैं बहुत खुश हूँ। तुमने चोरी करने में बहुत नाम कमाया है, परन्तु आज मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। भूले-भटके भी कभी भगवान् महावीर के व्याख्यान को मत सुनना।

'मैं प्रतिज्ञा करता हूँ पिताजी!' रोहिणेय ने कहा! कुछ दिनों बाद पिता की मृत्यु हो गई। अब रोहिणेय ने रोज चोरी करके पूरे नगर में आतंक मचा दिया। कभी नगर सेठ के घर, कभी जौहरी की दुकान में, कभी कपड़ा बाजार में तो कभी किराना की दुकान में। एक रोज वह चोरी करके आ रहा था। उसके पीछे सिपाही दौड़ रहे थे। वह उसी दिशा की ओर जा रहा था, जिधर भगवान महावीर उपदेश दे रहे थे। सिपाही बड़ी तेजी से उसके पीछे दौड़ रहे थे।

प्रभु महावीर का प्रवचन स्थल नजदीक आने लगा, उनके शब्द कानों में ज्योंहि पड़ने शुरू हुए, त्योंहि रोहिणेय ने कानों में अंगुलियाँ डाल दी। अचानक उसके पैर में काँटा चुभ गया। उसने सोचा- अभी यदि काँटा निकालूंगा तो महावीर के शब्द कानों में पड़ जायेंगे। कुछ देर तक वह दौड़ता रहा, पीछे देखा तो सिपाही बहुत ही नजदीक आ गये थे। उसने रुककर शीघ्र ही काँटा निकाला और भाग गया। जितना समय उसे काँटा निकालने में लगा उतने समय में भगवान महावीर के तीन वाक्य उसके कानों में पड़े। और वे शब्द कानों तक ही नहीं रहे, बल्कि सीधे हृदय में उतर गये। वे शब्द थे-

'देवताओं की आँखें कभी झपकती नहीं, उनके पैर पृथ्वी पर पडते नहीं, वे हमेशा पृथ्वी से चार अंगुल ऊँचे अधर रहते हैं, उनके गले में पडी पुष्पमाला कभी मुरझाती नहीं।'

नगर में आये दिन हो रही चोरियों से सम्राट श्रेणिक चिन्तित था। सेनापति, नगरसेठ, पूरा नगर चिंतित था। सम्राट को अपने महामन्त्री की बुद्धि पर गौरव था। टहलते हुए अभयकुमार को कहा- चोर को पकड़ने की व्यवस्था करो, नहीं तो जनता के हृदय में राज्य के प्रति अविश्वास हो जायेगा। अभयकुमार ने जवाब दिया- पिताजी! चोर को मैं अच्छी तरह जानता हूँ, उसका नाम रोहिणेय है, किन्तु वह इतना चालाक है कि पीछे कोई सूत्र नहीं छोड़ जाता। उसके विरूद्ध कोई प्रमाण नहीं है। मैंने सख्त घेराबन्दी की है, मुझे विश्वास है कि कुछ ही दिनों में वह कारागार की हवा खा रहा होगा।

एक समय की बात है- रोहिणेय चोरी

करने जा रहा था कि अभयकुमार ने उसे पकड़ लिया। किन्तु उसके पास चोरी हुई कोई वस्तु नहीं थी।

अभयकुमार ने सम्राट से एकान्त में बात की। सम्राट ने कहा- जब तक कोई प्रमाण नहीं हो या वह अपराध स्वीकार न करले, तब तक मैं उसे कोई सजा नहीं दे सकता।

अभयकुमार ने रोहिणेय को कठोर स्वर में कहा- रोहिणेय! तुमने आज दिन तक इतनी चोरियाँ की हैं, इतना धन लूटा है कि यदि पाँच बार मृत्युदण्ड दिया जाय तो वह भी कम होगा। अब तूं ही बता- तुझे क्या दण्ड दें।

अभयकुमार बुद्धि का धनी था तो रोहिणेय भी कम नहीं था। रोहिणेय बोला- अन्नदाता! आप क्या फरमा रहे हैं? मैं और चोर! मेरा नाम रोहिणेय नहीं है। मैं तो दो कोस दूर शालिपुर गाँव में रहने वाला दुर्गचन्द्र हूँ। मैं तो व्यापार के काम से शहर में आया था कि मुझे पकड़ लिया।

अभयकुमार ने कहा- ठीक है, मैं अभी शालिपुर के मुख्य-मुख्य व्यापारियों को बुलाता हूँ। अभी पता चल जाता है कि तुम कौन हो?

अभयकुमार ने अपने सेवकों को शालिपुर भेजा। वहाँ से वे पांच व्यापारियों को ले आये। उन्होंने रोहिणेय को देखा तो वे बोले- अरे, दुर्गचन्द! तूं कैसे पकड़ा गया? हमें विश्वास है कि तुम कभी कोई गलत काम नहीं कर सकते। फिर अभयकुमार को देखकर बोले- आपको जरूर धोखा हुआ है, ये तो हमारे गाँव के प्रतिष्ठित सज्जन हैं, इनको छोड़ दो।

अभयकुमार आश्चर्यचकित हो गया। उसने देखा- यह रोहिणेय ही है और ये लोग इसको अपने गाँव का सज्जन बता रहे हैं।

वास्तव में वे पांचों आदमी रोहिणेय की टोली के ही थे। वे भी चोर थे। रोहिणेय की दृष्टि बड़ी दीर्घ थी। उसने पहले से ही सारी तैयारी कर रखी थी कि हो सकता है, कभी मैं पकड़ा जाऊँ तो मैं अपने आपको शालिपुर का दुर्गचन्द्र बता सकूं और आपको बुलावा आए तो आप भी इस गांव से मेरी पहचान करना।

अभयकुमार ने देखा- ये तो हाथ आई चिड़िया फुर्र से उड़ने की तैयारी में है और वह नहीं चाहता था कि रोहिणेय छूट जाय। यदि छूट गया तो अब दुगुने जोश में चोरियां करेगा।

उसने कुछ सोचकर कहा- दुर्गचन्द्र! मेरी गलती हो गयी, मैंने तुमको रोहिणेय समझ लिया था। अब मेरे यहाँ भोजन कर लो फिर शालिपुर चले जाना।

रोहिणेय ने स्वीकार कर लिया। रोहिणेय के भोजन में बेहोशी की दवा मिला दी। रोहिणेय खाना खाते ही बेहोश हो गया। पूर्व नियोजित योजना के अनुसार उसे उठाकर एक महल में पहुँचा दिया गया। वह महल अत्यंत सुन्दर था, चारों ओर ऐतिहासिक, कलात्मक चित्र चित्रित थे। एक बहुत शानदार नर्म गद्दे पर उसे सुला दिया गया।

जब बेहोशी की दवा का असर कम होने लगा तो अभयकुमार ने कुछ सुन्दर दासियों को उस महल में भेज दिया। उनको वहाँ जाकर क्या करना है, यह उनको अच्छी तरह से समझा दिया था।

रोहिणेय आँखें मलता हुआ बैठा, अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। देवियाँ ही देवियाँ नजर आई। कोई पंखा झूल रही थी तो कोई नृत्य कर रही थी, कोई बीन बजा रही थी। रोहिणेय को आश्चर्य हुआ। मैं कहाँ हूँ, आप कौन हैं?

एक देवी आगे बढी, उसने हाथ जोड़कर कहा- स्वामिन्! आप देवलोक में आ गये है, हम सब देवियाँ हैं, आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। रोहिणेय का आश्चर्य दुगुना हो गया।

इतने में एक देवी पास के कमरे से निकलकर आई। उसके हाथ में रजिस्टर और कलम थी। वह बोली- हे देव! आपने मानव जीवन में बहुत से पुण्य कार्य किए होंगे, लोगों को दान दिया होगा, जनता की भलाई के लिए विश्राम-घर बनाये होंगे। इसीलिए तो आप देव रूप में जन्मे हो। हे देव! आप अपने जीवन को याद करो, जो कुछ कार्य किया, उसे सच-सच बताओ। रोहिणेय सोचने लगा- मैंने तो जीवन में पाप ही पाप किया है, दान देना तो दूर, लूटा है, मुझ जैसे पापी को स्वर्ग कैसे मिला? वह सोच ही रहा था कि उसे भगवान महावीर के वे वचन याद आ गये।

(क्रमशः)

प्रीत की रीत

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री चन्द्रप्रभ स्तवन–विवेचन

बहिनम. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजीम.

व्यवहारे बहुमान ज्ञाननिज,
चरणे जिनगुण रमणाजी।
प्रभु गुण आलंबी परिणामे,
ऋजुपद ध्यान स्मरणाजी।।४।।

परमात्मा के केवलज्ञानादि विशिष्ट और अद्‌भुत ज्ञान के प्रति अहोभाव होना और आचरण से परमात्मा के गुणों में रमणता लाना व्यवहार नय की अपेक्षा से भाव सेवा है। परमात्मा के गुणों का आलंबन लेकर अपनी चेतना के अंतरंग में विचरण करना उसी में तन्मय बनना ऋजुसूत्र नय की अपेक्षा से अपवाद (निश्चय नय से) भाव सेवा है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्‌जी ने निश्चय नय से परमात्मा हमारे आधार कैसे बन सकते हैं और व्यवहार नय से परमात्मा की प्रभुता हमारा आदर्श कैसे बनती है, इसे समझाया है। यह नहीं कि मात्र व्यवहार नय से ही प्रभु का आलंबन हमारे जीवन में प्रविष्ट हुए भाव अंधकार को दूर करता है अपितु निश्चय नय से भी परमात्मा हमारे लिये उतने ही उपकारक हैं, जितने व्यवहार नय से।

परमात्मा के दर्शन करने से हमें अपनी अज्ञानदशा का भान होता है। परमात्मा की केवलज्ञान रूप स्वरूप-संपदा को देखकर अगणित आत्माओं पर उनकी वाणी द्वारा किये जा रहे उपकारों को समझकर हमें अपनी अज्ञान में डूबी चेतना का अहसास होता है कि कहाँ विराट् और विश्व व्यापक ऊर्जा के स्वामी प्रभु और कहाँ पुद्‌गलों के राग में भान भूला मैं? इस प्रकार प्रभु की प्रभुता का चितंन करने से प्रभु भक्ति में स्वयं का जो भावोल्लास बढता है, उसके द्वारा प्रभु के गुणों में रमणता और तन्मयता पैदा होती है। इससे साधक की जो क्षायोपशमिक ज्ञानादि गुणों की प्रवृत्ति प्रभु के गुणों का अनुसरण करने वाली बनती है, वह व्यवहार नय की दृष्टि से अपवाद भाव सेवा है।

अरिहंत परमात्मा के गुणों को आधार बनाकर अपनी चेतना को विशुद्ध ज्ञान, दर्शन और चारित्र में परिणमाना (तन्मय बनाना), बाह्य विषय कषायों में उलझी हुई चेतना को आत्मोन्मुखी बनाना, स्वयं के स्वरूप में ही डूबो देना ऋजुसूत्र नय की अपेक्षा से अपवाद भाव सेवा है।

शब्दे शुक्ल ध्यानारोहण,
समभिरूढ गुण दशमेजी।
बीय शुक्ल अविकल्प एकत्वे,
एवंभूत से अममेजी, श्री. ।।५।।

अरिहंत परमात्मा के शुक्ल ध्यान के आरोहण का ध्यान करना शब्द नय की अपेक्षा से अपवाद भाव सेवा है। दशवें सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक को प्राप्त करना समभिरूढ नय की अपेक्षा से अपवाद भाव सेवा है। बारहवें क्षीण मोह गुणस्थानक को अर्थात् शुक्ल ध्यान के दूसरे पाद यानि निर्विकल्प समाधि को उपलब्ध करना एवंभूत नय की अपेक्षा से अपवाद भाव सेवा है।

प्रस्तुत पद्य श्रीमद्‌जी के ध्यान, योग, दृष्टि एवं नयवाद की विद्वत्ता का परिचायक है। उन्होंने गागर में सागर भरा है। अत्यंत सीमित शब्दों में इतना गहरा द्रव्यानुयोग समा देना श्रीमद् जैसे विरले ज्ञानियों के लिये ही संभव है। चूंकि उनकी प्रज्ञा इतनी निर्मल और स्वच्छ थी कि परमात्मा वाणी का निर्मल प्रकाश उसमें प्रतिबिम्बित हो जाता था।

उनके ये भजन भी उनकी अपनी

संतुष्टि और आत्मदर्शन के लिये बने थे। कीर्ति की कामना कभी भी किसी को अहंकार शून्य नहीं बना सकती। कीर्ति कामी विनम्र बनेगा तो उसकी विनम्रता में भी अहंकार टपके बिना नहीं रहेगा।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने शुक्ल ध्यान के चार पायों का विवेचन किया है। पृथक्त्व वितर्क, एकत्व वितर्क, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती और व्युपरतक्रिया निवृत्ति ये शुक्ल ध्यान के चार चरण हैं। प्रथम के दो चरण पूर्व ज्ञानधारी आत्मा को होते हैं। परंतु इसमें अपवाद भी है। कभी कभी जो पूर्वधर नहीं होते, उनमें भी ये पाये जा सकते हैं। जैसे मरूदेवी माता, माषतुष आदि। जब कोई पूर्वधर आत्मा पूर्वधर हो जाय तब पूर्वगत श्रुत के आधार पर और जब तक वह पूर्वधर नहीं होता तब अपने में संभवित श्रुत के आधार पर किसी भी जड या चेतन द्रव्य के उत्पत्ति, स्थिति और विनाश आदि अनेक पर्यायों का विविध नयों के द्वारा भेदप्रधान चिंतन करता है तब वह ध्यान पृथक्त्व वितर्क सविचार कहलाता है। इसमें आठवां और नौवां गुणस्थानक हो सकता है। आठवां और नौवां गुणस्थानक शुक्ल ध्यान के प्रथम चरण के प्रारंभ में रहता है। जबकि चरण के अंत में दशवां गुणस्थानक हो जाता है और नय समभिरूढ रहता है।

शुक्ल ध्यान के दूसरे चरण अर्थात् एकत्व वितर्क अविचार की व्याख्या शास्त्रों में इस प्रकार की गई है। पूर्वधर पूर्वगत श्रुत के आधार पर किसी भी एक ही पर्याय रूप अर्थ का अभेद प्रधान चिंतन करता है। और मन, वचन और काया इन तीन योगों में से किसी एक ही योग पर अटल रहता है। पहला भेद प्रधान है, दूसरा अभेद प्रधान! पहले भेद प्रधान का अभ्यास दृढ हो जाने के बाद ही दूसरे अभेद प्रधान ध्यान की योग्यता पैदा होती है। जैसे सारे शरीर में व्याप्त सर्पादि के जहर को मंत्रादि उपायों से सिर्फ डंक की जगह लाकर छोड दिया जाता है, वैसे ही सारे जगत में भिन्न-भिन्न विषयों में अस्थिर रूप से भटकते हुए मन को ध्यान के द्वारा किसी भी एक विषय पर लगा कर स्थिर किया जाता है, इस स्थिरता के दृढ हो जाने पर जैसे बहुत से ईंधन के निकाल लेने और बचे हुए थोडे से ईंधन से सुलगा देने से जैसे अग्नि बुझ जाती है वैसे ही एक विषय पर स्थिरता प्राप्त होते ही अंत में मन भी सर्वथा शांत हो जाता है। इस स्थिति में बारहवें गुणस्थानक और एवंभूत नय की अपेक्षा से अपवाद भाव सेवा है। तीसरे चरण में मात्र श्वास-निश्वास आदि सूक्ष्म क्रिया ही बाकी रहती है और चौथे में तो ये सूक्ष्म क्रियाऐं भी बंद हो जाती है।

श्रीमद्जी का प्रस्तुत पद्य के माध्यम से पाठक या श्रोता को संदेश है कि ध्यान केन्द्रित करने के लिये किसी सामान्य वस्तु का चुनाव न कर परमात्मा दर्शन को ही केन्द्र बनाना चाहिये। परमात्मा की प्रतिमा से इतना आनन्ददायक अमृत झरता है कि अवश्य ही वह हमारे चंचल मन को एकाग्र करके अमरत्व की दिशा में पहुँचा देगा। दिशा बदलते ही दशा स्वत: बदल जायेगी।

उत्सर्गे समकित गुण प्रगट्यो, नैगम प्रभुता अंशेजी।
संग्रह आतम सत्तालंबी मुनिपद भाव प्रशंसेजी, श्री ॥६॥

जब चेतना में तत्त्वों पर गहरी आस्था पैदा होने के कारण सम्यक्त्व गुण की प्राप्ति होती है, तब आत्मा को आंशिक सफलता प्राप्त होती है। यह नैगम नय से उत्सर्ग भाव सेवा है। सम्यक्त्व प्राप्त होने के बाद भाव मुनि पद को पाकर जब आत्मा सत्ता में रमणता और तन्मयता पैदा होती है तब संग्रह नय से उत्सर्ग भाव सेवा है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने दो बातें स्पष्ट की है। पूर्व श्लोक में उन्होंने अपवाद भाव सेवा का विवेचन किया है। इसमें अब वे उत्सर्ग भाव सेवा का वर्णन करते हैं। इसमें सम्यक्त्व का लक्षण और परिणाम दोनों ही बताये गये हैं। दर्शन की अतल गहराई को स्तुतिपरक भजनों में ढालकर उन्होंने दार्शनिक दुरूहता को न्यून करने का प्रयास किया है। जिसमें वे पूर्ण सफल हुए। इस पद्य में आत्मा के भावों का निरूपण हुआ है।

आत्मा में सभी पर्याय दूसरी अवस्था में पायी जाती है। पर्याय एक अवस्था में तो दूसरी पर्याय दूसरी अवस्था में पायी जाती है। पर्यायों की भिन्नता ही भाव कहलाती है। आत्मा के पर्याय अधिक से अधिक पांच भाव वाले हो सकते हैं। औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और परिणामिक! (क्रमश:)

संस्मरण

33

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत की वक्तृत्व शैली अनूठी थी। उन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अभ्यास किया था। तो व्यावहारिक वातावरण से भी वे अपने आप को लगातार अप्डेट करते थे।

वे जिस क्षेत्र में विहार करते, उस क्षेत्र में एक अनूठा वातावरण निर्मित होता था। ऐसा कोई शहर नहीं, जहाँ वे पधारे हों और उनके सार्वजनिक प्रवचन न हुए हों!

वे जैन समाज के साथ साथ अन्य समाजों के साथ संवाद स्थापित करने में निपुण थे। इस कारण उन्होंने आगमों के साथ साथ सनातन धर्म के ग्रन्थ गीता, वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि का पूर्ण अभ्यास किया था। बौद्ध धर्म के धम्मपद, त्रिपिटक आदि ग्रन्थों का तथा मुस्लिम धर्म के कुरान आदि गहन अध्ययन किया था। कुरान पढने के लिये तो उन्होंने एक चातुर्मास में एक मौलवी की सेवाऐं प्राप्त की थी। पूज्यश्री ने कई आयतों का पारायण करके उन्हें स्मृति-पाठ का विषय बनाया था।

उनका कहना था कि मुझे परमात्मा महावीर की वाणी का स्वाद जनता को चखाना है। इसके लिये मैं सभी ग्रन्थों का सहारा लेता हूँ। ताकि अन्य समाजों को भी परमात्मा की वाणी की गहराई का बोध हो।

पूज्यश्री विहार करते हुए जावरा पधारे थे। वहाँ मुस्लिम जनता का बाहुल्य है। तब भारत आजाद नहीं हुआ था। जावरा पर नवाब का शासन था। वे पूज्यश्री के संपर्क में आये। और एक रात को सार्वजनिक प्रवचन नवाब के आग्रह पर उनकी उपस्थिति में आयोजित किया गया।

हजारों की संख्या में मुस्लिम लोग आये हुए थे। कुरआन शरीफ की ला इकरा फिद्दीन, कुल्लुनाशे हुस्ना आदि कई आयतों के आधार पर पूज्यश्री ने 'तकरीर' की। और बुलंदी के साथ कहा- कुरान शरीफ हिंसा की इजाजत नहीं देता। प्रवचन से नवाब साहब और सारी जनता प्रभावित थी।

पूज्यश्री के प्रवचन की गूंज जावरा में वर्षों तक बनी रही थी।

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

अपने-अपने पुण्य-पाप

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का विवेचन

मुनि श्री मनितप्रभसागर जी म.

संयम का पथ सीधा और सपाट नहीं है। उतार-चढाव से भरा होने पर भी यह वह पथ है, जो शाश्वत धाम तक पहुँचाता है। इसके लिये चाहिये मन की स्थिरता, विचारों की दृढता और आचार की पवित्रता।

यदि दृढता और श्रद्धा की परिपूर्णता नहीं है तब तो इस महायात्रा के चरम ध्येय को उपलब्ध कर पाना संभव नहीं।

उत्तराध्ययन सूत्र का उनतीसवां अध्ययन और उसका स्वर्णिम सूत्र-**'बालुयाकवले चेव निरस्साए उ संजमे।'** बालू के कौर समान संयम निरस है। यदि किसी को बालू को निगलने में सरसता प्रतीत हो तो संयम के परीषह सरस लगे।

मुनि! असंयम के दुश्मन से सावधान बन! वह है तो शत्रु पर मित्रता का चोला पहनकर तुझे गुमराह कर रहा है कि असंयम सुखमय है। यह अवस्था संसार में आनंद मनाने की है। यह उम्र तो भोगों में रमने की है। क्यों अपनी कोमल काया को कष्टों की महाज्वाला में झोंककर स्वाहा कर रहा है। पर मुनि! संसारी प्राणियों का अपना अपना पुण्य और पाप होता है। कोई भी उसमें भागीदार नहीं बनता।

- एक गृहिणी पूरे परिवार के लिये सब्जी, फलादि संवारती है तब छुरी से अंगुली मे घाव हो जाये तो उसकी पीडा में भागीदार कौन बनता है? कोई भी नहीं।
- रोटी सेकते हुए गर्म तवे का स्पर्श हो जाये तो उस दु:ख को बांटने कौन आता है? कोई भी नहीं। वैसे ही तूं संयम का उज्ज्वल परिधान छोड़कर संसारी बनकर पाप करेगा तो उसका फल भोगने के लिये तेरे साथ भला कौन तैयार होगा?जो जहर पीता है, वो ही जीवन खोता है, वैसे ही पाप करने वाले एकाकी जीव को ही दुष्फल भोगना पड़ता है।
- तूं परिवार के पालन-पोषण के लिये व्यापार में अनीति, घोटाला, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, मिलावट, मृषावाद, अन्याय आदि पापों का सेवन करेगा। उस प्राप्त पूंजी से सुख सभी मनाएंगे पर जब उन पापकर्मों के फलस्वरूप नरक के दु:ख झेलने पड़ेंगे तब कोई भी यह कहने नहीं आयेगा कि चलो पिताजी! आपने हमारे सुख के लिये पाप किये हैं अत: हम भी आपके दु:ख में हिस्सेदार बनेंगे।
- तूं घर-मकान बनवायेगा स्वजनों के लिये परन्तु उसमें होने वाली त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा को परिणामस्वरूप मिलने वाले नेत्रांधता, बधिरता, कुष्ट रोग, चर्म रोग आदि दुख विपाक तुम्हें ही भोगने पड़ेंगे।

तुम्हें याद है न सुलस कुमार का दृष्टांत। जब उससे कहा गया कि तुम्हें अपने पिता के

कार्यभार का निर्वहन करना है तब उसने कहा कि ऐसा पापकारी काम मैं नहीं करूगा क्योंकि पाप का कटुफल मुझे ही भोगना पड़ेगा। क्या तुम में से कोई भी उस फल को भोगेगा?

जब घर वालों ने स्वीकृति दी, तब उसने छुरी से शरीर पर एक घाव किया जिससे खून बहने लगा। उसने समक्ष खडे सभी लोगों से कहा कि- आओ! मेरी पीड़ा में भागीदार बनो पर यह संभव न था। सभी किंकर्त्तव्यविमूढ बने खडे रहे।

न कोई पुण्य के फल में हिस्सेदार बन सकता है, न पाप के फल में!

- अहिंसा का फल मेतारज मुनि ने पाया और हिंसा का कालसौकरिक कसाई ने।
- सत्य वचन का फल राजा हरिश्चन्द्र ने पाया और मृषावाद का कटुफल वसुराजा ने भोगा।
- लोभ का फल मम्मण सेठ ने और त्याग का फल कपिल केवली ने पाया।
- संयम वेश का फल पुण्डरीक मुनि ने पाया और संसार के राग का दुष्परिणाम कण्डरीक मुनि को मिला।
- जिनाज्ञा पालन का फल गुरू गौतम स्वामी ने पाया हो और विराधना का दु:खद परिणाम जमाली ने भोगा।

हे मुने! तेरी प्रतिभा से मैं अपरिचित नही हूँ। तू तो थोडे में बहुत समझ लेता है। सुज्ञेषु किं बहुना जल्पितव्यं?

देख! दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका के पन्द्रहवें सूत्र को- **पत्तेअं पुण्णपावं।**

दीक्षा छोडने के बाद तूं जिन अठारह पाप स्थानकों का सेवन करेगा, कर्म बांधेगा, वे सब तुझे अकेले ही भोगने होंगे। न स्वजन-परिजन साथ देंगे, न मित्र-रिश्तेदार!

तुझे बहुत कुछ समझा चुका हूँ, अब तो तुझे ही गंभीरता के साथ चिन्तन करना है कि संयम का वेश कितना हितकारी और उपकारी है।

www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

निवेदन

जहाज मंदिर मासिक पत्रिका का प्रकाशन पिछले 17 वर्षों से निरन्तर हो रहा है। इस मासिक के प्रकाशन में पाठकों का हमें अपार सहयोग उपलब्ध होता रहा है। यह आपके सहयोग का ही परिणाम है कि यह पत्रिका निरन्तर ऊँचाईयों की ओर अग्रसर है। लोकप्रिय पत्रिकाओं में इसकी गणना है। पाठक वर्ग पत्रिका की प्रतीक्षा करता है।

आपके इस सराहनीय सहयोग के लिये हम बहुत आभार अभिव्यक्त करते हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपने मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों को प्रेरणा करके इसके सदस्य बनावें। अपने परिवार के किसी मांगलिक अवसर पर पत्रिका को भी अपनी उपहार राशि अर्पण करना न भूलें।

हर महिने की 8 तारीख को जहाज मंदिर का नवीनतम अंक पीडीएफ प्रारूप में अपलोड हो जाता है। आप इसे वहाँ देख सकते हैं व डाउनलोड भी कर सकते हैं।

- जहाज मंदिर से संबंधित समाचार वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।
- जहाज मंदिर पत्रिका के संदर्भ में किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें। साथ ही अपना ईमेल आईडी भी लिखें।
- समाचार, पत्र, सुझाव आदि कूरियर से न भेज कर भारतीय डाक से ही भेजें।
- प्रकाशन हेतु समाचार, लेख, कहानी आदि भेजते समय यह ध्यान रखें कि महिने की 25 तारीख से पूर्व कार्यालय में पहुँच जाये। इसके बाद आने वाले समाचारों को अंक में स्थान देना संभव नहीं हो सकेगा।
- हमारे कार्यालय के मोबाइल नं. 0964 964 0451 है।

हम कामना करते हैं कि इसी प्रकार आपका सहयोग हमें उपलब्ध होता रहेगा।

आपका
डॉ. यू. सी. जैन
महामंत्री

श्री खरतरगच्छ कार्यकारिणी समिति ने सर्वप्रथम दो प्रस्ताव पारित किये। पहला प्रस्ताव ईर्यापथिकी षट्त्रिंशिका नामक ग्रन्थ के संदर्भ में था, जिसकी रचना 17वीं शताब्दी में उपाध्याय धर्मसागर ने की थी। जिसे उस समय के सभी गच्छों के आचार्यों ने मिलकर उत्सूत्र प्ररूपक कहते हुए गच्छ आम्नाय से बाहर कर दिया था। उनके द्वारा रचित सभी ग्रन्थों को जलशरण करवा दिया था। फिर भी चोरी छिपे बचे खुचे ग्रन्थों का प्रकाशन जान बूझकर गच्छ द्वेष फैलाने के लिये तपागच्छीय सागर समुदाय द्वारा उस समय किया गया था, इस कार्य की निंदा करते हुए उस ग्रन्थ को सरकार से जप्त कराने के लिये कोशिष करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

दूसरा प्रस्ताव खरतरवसही के पाटिये के संदर्भ में था।

इस प्रकार मिगसर वदि पंचमी ता. 21 नवम्बर 1929 को खरतरगच्छ के श्रावक संगठन की विधिवत् गतिविधियों का प्रारंभ हुआ।

जैसाकि स्पष्ट है कि इस संगठन के निर्माण में खरतरवसही का वह पाटिया था। यह जानकर दर्द भरा अचरज होता है कि जिस टूंक का निर्माण खरतरगच्छ संघ द्वारा हुआ हो, वर्षों तक जिसकी व्यवस्था खरतरगच्छ संघ द्वारा की जाती हो, जहाँ वर्षों तक खरतरवसही का बोर्ड लगा हुआ हो, उस बोर्ड को पुनः स्थापित करने के लिये इतना बडा आंदोलन करना पडा, यह मूर्तिपूजक समुदाय के पारस्परिक समन्वयभरे व्यवहार के लिये शर्म योग्य हकीकत है।

वार्तालाप के बीच स्वीकार करने पर भी पेढी लगातार टालमटोल करती रही। इसके बाद जो कार्यवाही हुई, वह पढते हैं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि पेढी मात्र समय-निर्गमन कर रही थी। उसकी मंशा स्पष्ट थी कि बात को लम्बा करते रहो, फिर धीरे धीरे यह बात ठंडे बस्ते में चली जायेगी। गच्छ वालों का जोश ज्यादा टिकने वाला नहीं है।

पेढी अपने ही प्रस्ताव से मुकर कर नया प्रस्ताव देती है और इस प्रकार समय पास करती है। आगे की कार्यवाही पढने से यह स्पष्ट हो जाता है। पहले पेढी की ओर से लिखा गया कि गच्छ के आगेवानों के तार मंगवाओ। तार मंगवाये गये तो कहा- तार बराबर नहीं है, व्यक्तिगत संपर्क करके पत्र मंगवाओ। इस प्रकार लगातार निर्णय बदल कर समय निर्गमन कर रही थी।

सम्मेलन द्वारा प्रस्ताव पारित करके पेढी को भिजवाया गया। उसके बाद भी काम नहीं हो पाया। सम्मेलन के बाद पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने पेढी से पुनः पत्र व्यवहार किया। जिसका पूरा विवरण श्वेताम्बर जैन नामक अखबार में ब्यौरेवार छपा है।

श्वेताम्बर जैन के 12 दिसम्बर 1929 के अंक में 'आणंदजी कल्याणजी की पेढी के साथ मेरा पत्र व्यवहार' शीर्षक के अन्तर्गत विस्तार से छपा है।

पूज्यश्री ने लिखा है-

उपा. श्री मणिप्रभसागरजीम.

मैंने जो कार्तिक सुदि सातम का पत्र दिया था, उसका जवाब आणंदजी कल्याणजी के मुनीम हरिलालभाई द्वारा इस प्रकार आया है–

जावक नं. 118

ता. 14 नवम्बर 1929

तमारा पत्रो चौमुखजी नी टूंक बाबत ना मल्या। श्री हरिसागरजी महाराज नो पत्र पण पहोच्यो छे ते बराबर छे पण ते ज मतलब ना पत्रो खरतरगच्छ ना जाणीता आगेवान गृहस्थो ना अमारा ऊपर आववा जोइए तो तमो महाराजश्री ने विनती करशो के तेवो साहेब तेज प्रमाणे ना पत्रो अमारा ऊपर मोकली आपवा गोठवण करे ने पत्रो मोकलवाने माटे वखत न पहोचतो होय तो सदरह पत्र ने सम्मत छे तेवा तार आगेवान गृहस्थो तरफ थी मोकलावी आपवा गोठवण करे, आ प्रमाणे ना पत्रो अगर तार आवे थी तेमना कार्तिक सुदि सातन ना पत्रमां जणाव्या मुजबनुं पाटियुं मारवा गोठवण करवामां आवशे.

के.पी. मोदी

अमृतलाल कालीदास,

वहीवटदार प्रतिनिधि

यह पत्र प्राप्त होने के बाद आचार्यश्री का एक तार खरतरगच्छ के आगेवान श्रावकों को दिया गया कि वे तार द्वारा अपनी सहमति शीघ्र भिजवायें।

जो तार दिया गया, उसका मेटर इस प्रकार था–

It is beeing setled for placing khttar vasi choumukhji tonk board by pedhi owing khartar sangh movement. wire approval me today.

तार के जवाब में आगेवानों के तार हाथोहाथ आये। तार प्राप्त करने के बाद पूज्यश्री द्वारा पेढी को इस प्रकार का तार दिया गया।

I have received cables as asked in your letter no.118. come by first train see telegrams and place the board.

Harisagar.

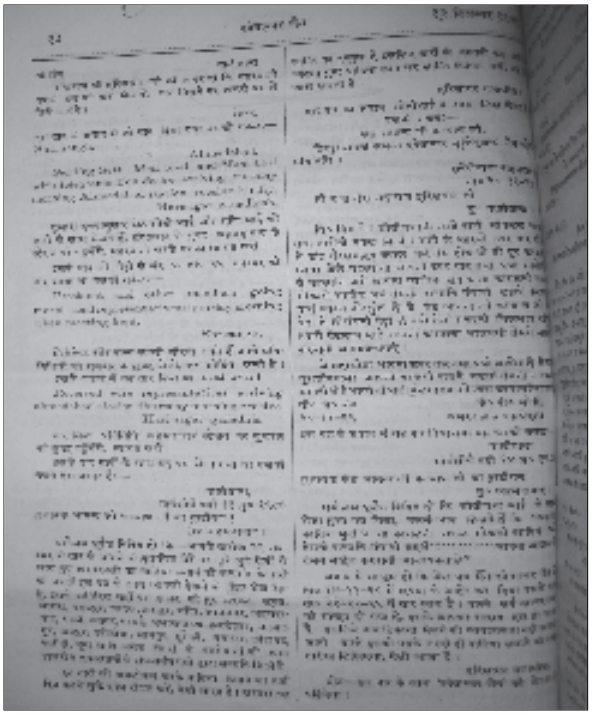

इस तार के उत्तर में पेढी का जवाब तार द्वारा आया, वह इस प्रकार था–

Shri sangh. Palitana

Inform maharaj shri Hari sagarji to kindly forward the telegrams to us on recipet necessary action will be taken.

self.

इस तार के उत्तर में पूज्य आचार्यश्री ने इस प्रकार तार भिजवाया–

Sending Seth Motibhai and Manibhai with telegrams you desire arriving tuesday morning Ahmedabad station receive kindly.

Harisagar Ganadhish

इस तार के उत्तर में पेढी का तार आया–

President and other members going Morbi send representatives thursday morning when meeting kept.

पेढी द्वारा यह समाचार आने पर कि प्रतिनिधियों को गुरुवार को भेजें। पूज्यश्री ने गुरुवार को उन प्रतिनिधियों को गच्छ के आगेवान श्रावकों के तारों के साथ भेजा। साथ में एक पत्र भी भेजा–

मार्गशीर्ष वदि 11 सं. 1986

सुश्रावक आणंदजी कल्याणजी का ट्रस्टीगण!

मु. अहमदाबाद

धर्मलाभ पूर्व विदित हो कि आपके तारीख 22 नवम्बर के तार से मांगने के मुताबिक मेरे पर जुदे जुदे देशों से आए हुए खरतरवसी का पाटिया लगाने की सम्मति के तारों की नकलें इस पत्र के साथ आपको देखने के लिये भेज रहा हूँ। इसके अतिरिक्त यहाँ पर हाजर रहे हुए लश्कर, सूरत, आगरा, उदयपुर, जावरा, नागपुर, चांदा, जामनगर, अहमदाबाद, पाली, ब्यावर, बम्बई, प्रभासपाटण, कुकडेश्वर, मलकापुर, जयपुर, वरोडिया, भानपुर, मुंगेली, बनारस, लोहावट, फलोदी, पूना आदि अनेक नगरो के आगेवानों की खास हाजरी व इतर स्थानों से संख्याबद्ध पत्रों द्वारा सम्मति मिली है।

इन तारों का अवलोकन करके पाटिया लगाने का दिन नक्की करके मुझे शीघ्र जानकारी दे, ऐसी आशा है। खरतरगच्छ शांति का इच्छुक है। इसलिये तारों से खातरी कर शीघ्रतया पुनः पाटिया लगा कर शान्ति स्थापन करें। यह मेरी खास सूचना है।

हरिसागर गणाधीश

इस पत्र का पेढी द्वारा दिया गया जवाब मोतीभाई के साथ इस प्रकार प्राप्त हुआ–

श्री गणाधीश महाराज हरिसागरजी म.

मु. पालीताना

वि.वि. सेठ मोतीचंदनी साथे आपे मोकलेल कागल तथा तारो नी नकल मिली। आपे जे गृहस्थो ऊपर तार करेल ते कांइ गैरसमजुत उत्पन्न करे तेम होवाथी तो दूर करवा खातर जे जे गृहस्थोना आपना ऊपर तार तथा पत्रो आवेला ते गृहस्थो ने अमे आपना कार्तिक सुदि 7 ना कागलनी नकल मोकली आपीए अने तेमनी सम्मति मंगावी लइए तेम करवानुं कारण एटलुंज छे के शेठ आनंदजी कल्याणजी नी पेढी ते श्री संघनी पेढी छे अने तेमां गच्छनो भिन्नभाव रहेवा न पामे, तेटलाज माटे आपना कागलना आशयथी तेमने माहेतगार करवानी आवश्यकता छे।

जे ग्रहस्थोना आपना ऊपर तार तथा पत्रो आवेला छे. तेमना पूरा शीरनामा आपनी तरफथी अमने मलतां तेमनी सम्मति मंगावीए. ते आव्येथी पाटीयुं लगाडवा गोठवण करवामां आवशे.

के.पी.मोदी

अमरतलाल कालीदास

ता. 28.11.29

इस पत्र के उत्तर में पूज्य गणाधीश श्री हरिसागरजी म.सा. ने लिखा–

मार्गशीर्ष वदि 14 शनिवार वि. 1986

सुश्रावक शेठ आनंदजी कल्याणजी के ट्रस्टीगण!

मु. अहमदाबाद

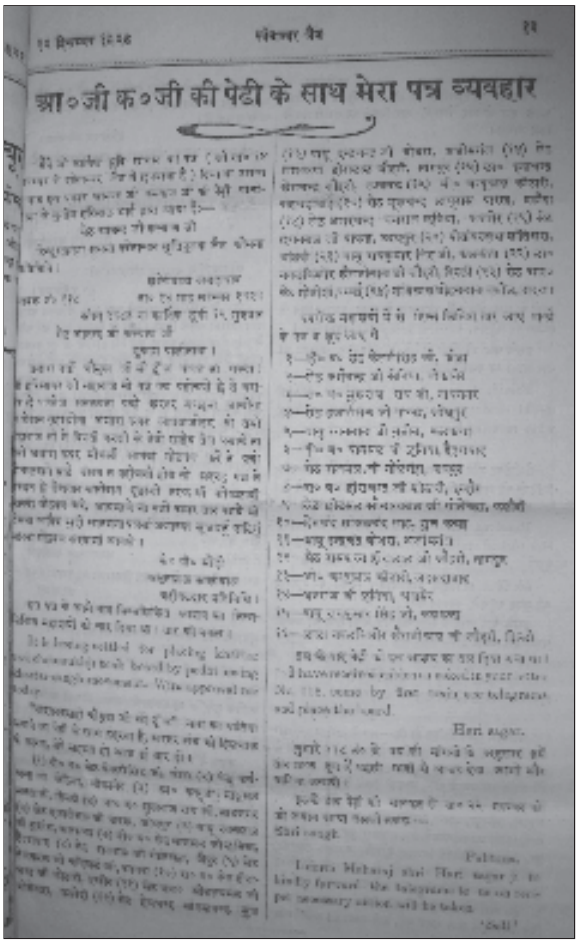

आ०जी क०जी की पेढी के साथ मेरा पत्र व्यवहार

धर्मलाभ पूर्वक विदित हो कि मोतीचंद भाई के साथ भेजा हुआ पत्र मिला। जवाब में मालुम हो कि मेरा पत्र श्वेताम्बर जैन में ता. 14.11.29 के अंक में छपवा कर जाहेर कर दिया। उसके बाद ता. 21.11.29 में तार आये हैं। वास्ते सर्व खरतरगच्छ को मालुम हो गया है, इससे आपका आशय हल हो जाता है। इसलिये अब ठिकाना भेजने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। वास्ते इसको पढते ही जल्दी ही पाटिया लगाने की नक्की तारीख लिखियेगा, ऐसी आशा है।

हरिसागर गणाधीश

इस प्रकार चल रहे पत्र व्यवहार से यह बहुत अच्छी तरह समझ में आ सकता है कि पेढी केवल और केवल टालमटोल कर रही थी। गच्छवाद के कारण ऐतिहासिक सच्चाई को नकार रही थी।

इस पत्र का उत्तर प्राप्त नहीं होने पर गणाधीशजी की ओर से तार दिया गया कि हमारे पत्र का उत्तर शीघ्र दो।

तब 4 दिसम्बर को पेढी का पत्र आया–

श्री गणाधीश हरिसागरजी महाराज साहेब, मु. पालीताना

वि.वि. के आपे अमे शेठ मोतीचंद भाई साथे ता. 28.11.29 नो पत्र मोकल्यो तेना प्रत्युत्तर मां कागल लख्यो ते पहोच्यो. आपनुं लखवुं ठीक छे परन्तु आपने विदित करवानु के आपे आपनो कार्तिक सुदि 7 नो पत्र श्वेताम्बर जैन ना ता. 14.11.29 ना अंक मां छपाव्यो तेथी तमे कहो छो के तमारा पत्र ना आशय थी आपना गच्छना आगेवान सद्गृहस्थो माहित थवा जोइए. पण ए बाबत मां एवो संभव रहे छे के आपनो छपावेलो पत्र जे जे गृहस्थो ना तार आव्या छे. तेमना वांचवामां आव्यो न पण होय तो अमने आपना आगेवान सद्गृहस्थोना सिरनामा मोकली आपवा तसदी लेशो के अमो सम्मति मंगावी लइए. हवे आपना तरफथी अमारी मांगणी मुजब ना सिरनामा आवेथी आगेवान सद्गृहस्थोने लखीए अने तेओनी सम्मति आवेथी तुरत पाटियुं लगाडवानी गोठवण थइ जशे ते खाते निश्चिंत रहेशो।

ता. सदर, के.पी.मोदी, अमरतलाल कालीदास.

इस पत्र का जवाब गणाधीशजी म. द्वारा इस प्रकार दिया गया–

सुश्रावक आनंदजी कल्याणजी के ट्रस्टीगण!

मु. अहमदाबाद

धर्मलाभ पूर्वक मालुम हो कि आपका जावक नं. 261 एवं 281 के पत्र मिले। जवाब में मालुम हो कि आप लोग इतने बुद्धिमान होने पर भी एक सामान्य बात पर इतना आग्रह कर रहे हैं, यह कितने आश्चर्य की बात है। मैं तो यह कहता हूँ कि तार वाले तमाम महाशयों के पास श्वेताम्बर जैन पहुँचता है तथापि आपकी शंका दूर करने को मैं स्पष्ट कहता हूँ कि तार वाले महाशयों में से मेरे कार्तिक सुदि 7 के पत्र पर यदि किसी का एतराज होगा, तो उसकी जिम्मेदारी मेरी है।

कहिये अब क्या चाहते हैं! अब शीघ्र 'श्री खरतरवसही चौमुखजी की टूंक' के बोर्ड लगाने का ऑर्डर भेजियेगा। इस उपरान्त भी यदि आप नाहक तूल कर विलंब करेंगे तो लाचार होकर पुनः योग्य विचार करना पडेगा। आशा है कि आप दीर्घदर्शी की तरह विचार कर संतोषकारक उत्तर देंगे।

हरिसागर गणाधीश

क्रमशः

अनमोल वचन

❀ दादा गुरुदेव का दरबार जाति, मत, पंथ, संप्रदाय आदि के संकीर्ण भावों से सर्वथा मुक्त है। कोई भी जा सकता है, पा सकता है।

❀ सच्ची श्रद्धा और सम्पूर्ण समर्पण, ये दो ऐसे द्रव्य है जो दादा को चढ़ाने पर जीवन में आनंद और शांति की रसधार बहने लगती है।

स्वाध्याय की सुवास

-साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.

उत्तराध्ययन सूत्र के सम्यक्त्व पराक्रम नामक अध्ययन में गौतम स्वामी ने भगवान से अपने हृदय की जिज्ञासा को प्रस्तुत किया।

'सज्झाएणं भंते। जीवे किं जणयइ?' स्वाध्याय से जीव क्या प्राप्त करता है?

भगवान महावीर ने शिष्य की जिज्ञासा को समाहित करते हुए कहा- **'सज्झाएणं नाणवरणिज्जं कम्मं खवेइ।'** अर्थात् स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

'स्वाध्याय' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है- **सु +आ+ अध्याय। सु**= अच्छा, **आ**= समग्रता से, **अध्याय**-अध्ययन और मनन। शुभ तथ्यों पर चिंतन-मनन करना स्वाध्याय है। तथा स्वयं का अध्ययन करना भी स्वाध्याय है।

'श्रुतस्याध्ययनं स्वाध्यायः' श्रुत-जिनवाणी-आगम-शास्त्रों का अध्ययन करना स्वाध्याय है।

शास्त्रों में स्वाध्याय के पांच प्रकार बताये गये हैं-

1. **वाचना**- धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना अथवा शिष्यों को अध्यापन करवाना वाचना है।

2. **पृच्छना**- अज्ञात विषय की जिज्ञासा के समाधान हेतु अथवा ज्ञात विषय को विस्तार से समझने हेतु गुरू महाराज से प्रश्न पूछना पृच्छना है।

3. **परावर्त्तना**- पठित या कंठस्थ विषय को स्मृति में स्थिर रखने के लिये पुनः-पुनः उसे दोहराना परावर्त्तना है।

4. **अनुप्रेक्षा**- पठित विषय पर चिंतन-मनन करना अनुप्रेक्षा है।

5. **धर्मकथा**- पठित व चिंतित विषय का उपदेश देना धर्मकथा है। उपरोक्त पांच प्रकार के स्वाध्याय से जिनवाणी की आराधना/उपासना होती है।

तप के 12 भेदों में स्वाध्याय 10 वां आभ्यंतर तप है। साधक उपवासादि के द्वारा जितने कर्मों का क्षय करता है, उससे अनन्त गुणा अधिक कर्म निर्जरा स्वाध्याय से होती है। स्वाध्याय से कृत्य-अकृत्य का बोध होता है। स्वाध्याय वह अमृत है, जो हमारी चेतना के अनादिकालीन कषाय एवं विषय-वासना के जहर को नष्ट कर अमरपद प्रदान करता है। स्वाध्याय एक संजीवनी भी है, जो हमारे भव-भ्रमण के महारोग को समाप्त कर शाश्वत सुख का वरदान देती हैं

स्वाध्याय की साधना करने वाला क्रमशः अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से विशेषज्ञ और विशेषज्ञ से सर्वज्ञ का शिखरारोहण करता है। मासतुष मुनि को देखे या वज्रस्वामी और दुर्बलिका पुष्यमित्र को, इन सबकी महानता का राज स्वाध्याय में छिपा हुआ है। बृहत्कल्प भाष्य में स्वाध्याय को श्रेष्ठ तप बताते हुए कहा है-

'न य अत्थि न वि अ होही, सज्झाय समं तवोकम्मं'

तप में स्वाध्याय के समकक्ष न कोई तप है, न कोई भविष्य में होगा। प्रत्येक

साधक के लिये यह एक उत्तम अनुष्ठान है, जिसकी आराधना से परमपद की उपलब्धि होती है।

भारतीय वाङ्मय में स्वाध्याय और शिक्षा को उच्चतम स्थान प्राप्त है। **'सा विद्या या विमुक्तये'** जो अज्ञान आवेश, अहंकार और अपराध से मुक्त करे, वही सही और सच्ची विद्या है। शिक्षा का प्राणतत्व है- चारित्र निर्माण, स्वस्थ चिंतन और संयमित जीवन। इसके बिना शिक्षा स्वयं एक समस्या बन जाती है।

वर्तमान की शिक्षा पद्धति मात्र आजीविका पूर्ति तक सिमट गयी है। आज कम्प्युटर एवं मीडिया के युग में प्रतिस्पर्धा की मनोवृत्ति ने व्यक्ति को अत्यधिक महत्वाकांक्षी बना दिया है। जीवन मूल्यों और संस्कारों को दांव पर लगाकर व्यक्ति डिग्री प्राप्ति की अन्धी दौड में शामिल हो रहा है। ज्ञान प्राप्ति एवं स्वाध्याय का लक्ष्य जहाँ विवेक-चेतना की जागृति, सद्भावना, अनुशासनशीलता, सच्चरित्रता, नम्रता आदि गुणों की प्राप्ति होना चाहिए, वहाँ येन-केन-प्रकारेण डिग्रियाँ प्राप्त करके भौतिक संसाधन जुटाना हो गया है। इस शिक्षा के परिणाम स्वरूप अनुशासन का स्थान अपराध ने, विवेक का स्थान विकलता ने, संयम का स्थान स्वच्छंदता ने और उन्नति का स्थान उन्माद ने ले लिया है।

आज मूल्यहीन शिक्षा का जितना विकास हुआ, मौलिक संस्कारों का उतना ही विनाश हुआ है। अध्ययन बढा है पर स्वाध्याय घटा है। स्वाध्याय का अर्थ है-लौकिक विद्या पढने के साथ आध्यात्मिकता का विकास करना।

वस्तुत: बाह्य शिक्षा के साथ जब अन्तरंग चारित्र निर्माण का लक्ष्य जुड़ जाता है, तब वह शिक्षा स्वयं स्वाध्याय बन जाती है।

अभिभावकों के लिये आवश्यक है कि वे सजग बने और अपने बच्चों को शिविर, पाठशाला, अथवा संत समागम में भेजे। सत्साहित्य, आदर्श कहानियाँ, जैन धर्म के मूलभूत तत्त्व और सिद्धान्त बचपन से ही पढने की प्रेरणा दे ताकि संस्कारों की पृष्ठभूमि मजबूत बन सके।

खरतरगच्छ के गौरव थे संघवी पुखराजजी छाजेड़

जिनशासन के रत्न गच्छ के गौरव, जीवदया प्रेमी परम गुरूभक्त सरल स्वभाव के धनी संघवी श्री पुखराजजी छाजेड़ का सीधा सरल जीवन, कथनी और करनी में समानता उनकी पहचान रही। आधुनिकता की अंधी दौड़ व चमक दमक के बीच भी महान विभूतियों की श्रृंखला में उन्हें आदर्श पुरूष के रूप में स्थापित करती है।

श्री पुखराजजी छाजेड़ के व्यक्तित्व को मैं एक शब्द में रेखांकित करूं तो वे असमझौतावादी थे। वे अपने सिद्धांतों का आजीवन पालन करते रहे। प्रसिद्धि प्राप्त करने की लालसा से दूर उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। मैंने पाया कि वे स्वयं के लिए अत्यन्त कठोर और बाकी सबके लिए अत्यंत विनम्र थे। वे हमेशा जूझने की प्रेरणा देते थे। उनके प्रेरणादायी जीवन की इतनी घटनाएं है कि उनको कुछ शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकाता। सत्य पर अडिग रहकर समर्पित भाव से काम करने वाले ऐसे व्यक्तित्व कम ही होते हैं। वे अपनी वाणी और कर्म से सदैव हम सबका मनोबल बढाते थे।

दो वर्ष पूर्व मुंबई में संपन्न हुए उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा के चातुर्मास को सफल बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मैं जब भी धर्मशाला में जाता हूँ, उनकी छवि आज भी मेरी आंखों के सामने दिखती है। विश्वास ही नहीं होता कि आज वे हमारे बीच नहीं है। श्री पुखराजजी छाजेड़ खरतरगच्छ संघ मुंबई के संस्थापकों में से एक थे। उनको मेरी हार्दिक और भावपूर्ण श्रद्धांजली।

-प्रकाश सी. कानुगो

जिन मंदिर एवं दादावाड़ी, अक्कलकुंआ का शिलान्यास संपन्न

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. एवं बहिन **म. डॉ.** साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में कुशलधाम **परिसर** में आदिनाथ जिन मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाड़ी का खात मुहूर्त ता. 10 नवम्बर 2014 को एवं शिलान्यास 12 नवम्बर 2014 को उल्लास व दिव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस समारोह के लिये नंदुरबार में चातुर्मास के बाद विहार कर पू. गुरूवर्याश्री अक्कलकुआ पधारे। प्रवेशयात्रा नवोदया विद्यालय से प्रारंभ हुई। अक्कलकुआ संघ प्रवेश में उमड़ पडा था।

प्रवेश समारोह को संबोधित करते हुए पू. गुरूवर्याश्री विद्युत्प्रभाश्रीजी ने कहा- अक्कलकुआ नगरी अत्यन्त भाग्यशाली है जिन्हें अल्प अवधि में यह दूसरा शिलान्यास कार्यक्रम आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में निर्माणाधीन इस कुशलधाम में देव एवं गुरू तत्त्व की साथ-साथ उपासना हो, इस लक्ष्य से कमल के आकार में मंदिर दादावाड़ी का निर्माण होने जा रहा है।

10 नवम्बर को प्रवचन के बाद कुशलधाम परिसर में स्व. श्री गेनमलजी एवं इन्द्रचंदजी बोहरा परिवार द्वारा खातमुहूर्त एवं भूमिपूजन किया गया। इससे पूर्व सुरजमल खेतमल भूरमल राजमल झाबक परिवार द्वारा भूमिशुद्धि का कार्य संपन्न हुआ। साधर्मिक वात्सल्य का लाभ श्री मांगीलालजी भंवरलालजी संकलेचा परिवार ने प्राप्त किया।

11 नवम्बर को पूज्या गुरूवर्या श्री के प्रवचन पश्चात् समस्त शिलाओं का भव्य जुलूस आराधना भवन से प्रारंभ हुआ। जुलूस का उल्लास देखते ही बनता था। सारा गाँव उल्लास में नहाया हुआ था। दो कि.मी. लम्बे इस जुलूस ने एक बार तो जैसे प्रतिष्ठा का भ्रम उपस्थित कर दिया।

नाचते झूमते युवकों का समूह नंगे पॉव परमात्मा एवं दादागुरूदेव की प्रतिमा को पालखी में उठाये चल रहा था।

जुलूस के बाद कुशलधाम में श्री जेठमलजी मेघराजजी गोलेच्छा परिवार की ओर से दादागुरूदेव की बड़ी पूजा पढायी गयी। सांयकाल की नवकारसी एवं रात्रि में भक्ति का विशिष्ट आयोजन श्री मेघराजजी अखेराजजी ललवानी परिवार द्वारा आयोजित किया गया।

12 नवम्बर को प्राप्त नाश्ते का आयोजन श्री लालचंदजी कानमलजी गोलेच्छा की ओर से था।

विभिन्न लाभार्थी परिवारों द्वारा कुंभ स्थापना, नवग्रह पूजा, दशदिक्पाल पूजन, अष्ट मंगल आदि विधान करवाये गये। उसके पश्चात पू. बहिन म. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. का मार्मिक एवं भावभरा प्रवचन हुआ। प्रवचन सुनकर श्रद्धालु जनता भावविभोर हो गयी। प्रवचन में पू. गुरूवर्याश्री ने कहा- आज तक हमने वीतराग परमात्मा एवं अपने परम उपकारी दादागुरूदेव से खूब प्राप्त किया है। आज उनके चरणों में कुछ समर्पण करने का अवसर आया है। इस अवसर को खोना नहीं है ।

यद्यपि ट्रस्ट मंडल ने मूर्ति भराने के नकरे तय किये थे, पर गुरूवर्या श्री के आदेश को स्वीकार करते हुए चढावे करने तय किये। परमात्मा आदिनाथ की मूर्ति भराने का सामूहिक नकरा 11000 तय किया गया एवं दादागुरू जिनकुशल सूरि की मूर्ति भराने का चढावे से लाभ लिया श्री जसराज जी राणुलाल जी कोचर परिवार ने।

स्मरण रहे जिनमंदिर एवं दादावाड़ी की मुख्य शिला का लाभ भी श्री कोचर परिवार को ही मिला था।

शांति सूरि गुरूदेव की मूर्ति भराने का लाभ श्री लालचंदजी कानमल जी गुलेच्छा परिवार ने, पद्मावती माता की मूर्ति भराने का लाभ श्री सुरेशचंदजी चैनसुखजी बोथरा परिवार खापर ने एवं नाकोडा भैरवदेव भराने का लाभ श्री मांगीलालजी भोमराजजी बोथरा शहादा खापर निवासी ने प्राप्त किया।

गुरूवर्याश्री की प्रेरणा पाकर आराधना भवन के हॉल का लाभ श्री धाईबाई राणुलालजी डागा परिवार ने, मुख्य कार्यालय का लाभ श्री लालचंदजी कानमलजी गुलेच्छा परिवार ने, भोजनशाला का श्री मांगीलालजी भंवरलालजी संकलेचा ने एवं एक कक्ष का श्री भंवरलालजी डोसी वेलदा वालों ने लाभ प्राप्त किया।

परिसर निर्माण में लाभ लेने की योजना बनायी गयी। जिसका नकरा 54000 रखा गया। निर्माण योजना में एवं मूर्ति भराने में हाथों हाथ अनेक नाम आ गये। इस शिलान्यास समारोह की सबसे बडी विशिष्टता थी कि जो करना बिना एक पल गवाये। यही कारण था चढावों का कार्यक्रम मिनिटों में संपन्न हो गया। कार्यक्रम में सभी लाभार्थी परिवारों का साफा, श्रीफल, माला एवं मोमेंटो द्वारा बहुमान किया गया।

सभी लाभार्थी परिवारों के साथ सकल संघ शिलान्यास स्थान पर पहुँचा। वहाँ पर विधिकारक बंधुओं द्वारा शिलान्यास की सारी तैयारी हो चूकी थी।

मंगल मंत्राक्षरों के बीच सभी लाभार्थी परिवारों द्वारा शिलान्यास किया गया।

आज की नवकारसी का लाभ श्री धाईबाई राणुलालजी डागा परिवार द्वारा सम्पन्न हुई। स्मरण रहे इसी परिवार के श्री प्रेमचंदजी डागा परिवार द्वारा मुख्य सड़क से लगा यह मूल्यवान भूखण्ड कुशलधाम ट्रस्ट मंडल को उदारता के साथ भेंट किया है। डागा परिवार द्वारा समर्पित भूखण्ड पर ही सारी योजना साकार हो रही है।

ट्रस्ट मंडल एवं समाज इस शिलान्यास कार्यक्रम से अत्यन्त गद्‌गद् है। कार्यक्रम के अंतर्गत दादा गुरूदेव का प्रत्यक्ष चमत्कार सभी ने महसूस किया। शिलान्यास की पूर्वरात्रि को अक्कलकुआ में चारों ओर जमकर वर्षा हुई पर कुशलधाम में मात्र शकुनरूप कुछ बुंदें ही पडी। ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजेन्द्रकुमार डागा द्वारा पधारे हुए समस्त मेहमानों एवं कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया गया। शिल्पी श्री विनोदजी घनश्यामप्रसादजी शर्मा का अभिनंदन किया गया। ट्रस्ट मंडल ने गुरूवर्या श्री को कांबली ओढायी।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

तत्त्वावबोध

15

चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

नोट- पिछले अंक में नं. 103 में असावधानी वश कुछ गल्तियां रह गई थी। इस अंक में उसे सुधार कर पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

१०३ गुरू-शिष्य मोक्ष-देवलोक

1. गुरू और शिष्य, दोनों मोक्ष में- **परमात्मामहावीर और गौतम स्वामी**
2. गुरू मोक्ष में, शिष्य देवलोक में- **जम्बूस्वामी और प्रभव स्वामी**
3. गुरू देवलोक में- शिष्य मोक्ष में- **खंधकमुनि और उनके ५०० शिष्य**
4. गुरू-शिष्य, दोनों देवलोक में- **प्रभव स्वामी और शय्यंभव स्वामी**

१०४ गुरू-शिष्य-देवलोक-नरक

1. गुरू और शिष्य, दोनों देवलोक में- **जिनदत्तसूरि और मणिधारी जिनचन्द्रसूरि**
2. गुरू और शिष्य, दोनों नरक में- **पापी गुरु और शिष्य**
3. गुरू देवलोक में, शिष्य नरक में- **कुलवालुक मुनि और उनके गुरू**
4. गुरू नरक में, शिष्य देवलोक में- **अंगारमर्दकाचार्य एवं उनके शिष्य**

१०५ क्षमापना

1. गुरू ने शिष्य को खमाया- **चन्दनबाला ने मृगावती को**
2. शिष्य ने गुरू को खमाया- **मुनि सोमचन्द्र (जिनदत्तसूरि) ने धर्मदेव गणि को**
3. शिष्य और गुरू, दोनो ने खमाया- **चण्डरूद्राचार्य और उनका शिष्य**
4. शिष्य और गुरू, दोनों ने नहीं खमाया- **चण्डकोशिक के पूर्व भव में गुरु एवं शिष्य**

१०६ अपकार और उपकारी

1. उपकारी पर उपकार किया- **वीर प्रभु ने देवानन्दा पर**
2. उपकारी पर अपकार किया- **कोणिक ने श्रेणिक पर**
3. अपकारी पर अपकार किया- **कृष्ण ने कंस पर**
4. अपकारी पर उपकार किया-**परमात्मा महावीर ने चण्डकौशिक पर**

१०७ विनीत-अविनीत

1. गुरू शान्त, शिष्य अविनीत- **गर्गाचार्य और उनके ५०० शिष्य**
2. गुरू शान्त, शिष्य विनीत- **परमात्मा महावीर और गौतम स्वामी**
3. गुरू अशान्त, शिष्य विनीत- **चण्डरूद्राचार्य और उनका शिष्य**
4. अशान्त गुरू, अविनीत शिष्य- **गोशालक और उनके शिष्य**

१०८ पुण्य-पाप

1. मैंने पुण्यानुबंधी पुण्य बांधा- **सनत्कुमार चक्री**
2. मैंने पापानुबंधी पुण्य बांधा- **नंदमणियार**
3. मैंने पुण्यानुबंधी पाप बांधा - **चण्डकौशिक ने पूर्व भवों में**
4. मैंने पापानुबंधी पाप बांधा - **कालसौकरिक कसाई**

१०९ ज्ञान-संवेदन

1. सुख-दुःख का ज्ञान पर संवेदन नहीं- **सिद्ध परमात्मा**
2. सुख-दुःख का ज्ञान नहीं, पर संवेदन है- **असंज्ञी, एकेन्द्रिय आदि जीव**
3. सुख-दुःख का ज्ञान और संवेदन, दोनों है- **संज्ञी जीव**
4. सुख-दुःख का ज्ञान और संवेदन, दोनों नही है- **अजीव**

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

पंचांग

Jan. 2015

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1 पौष सुदि 11	2 पौष सुदि 12	3 पौष सुदि 13
4 पौष सुदि 14	5 पौष सुदि 15	6 माघ वदि 1	7 माघ वदि 2	8 माघ वदि 3	9 माघ वदि 4	10 माघ वदि 5
11 माघ वदि 6	12 माघ वदि 7	13 माघ वदि 8	14 माघ वदि 9	15 माघ वदि 10	16 माघ वदि 11	17 माघ वदि 12
18 माघ वदि 13	19 माघ वदि 14	20 माघ वदि 30	21 माघ सुदि 1	22 माघ सुदि 2	23 माघ सुदि 3/4	24 माघ सुदि 5
25 माघ सुदि 6	26 माघ सुदि 7	27 माघ सुदि 8	28 माघ सुदि 9	29 माघ सुदि 10	30 माघ सुदि 11	31 माघ सुदि 12

पर्व दिवस			
	04.01.2015 **पाक्षिक प्रतिक्रमण**	02.01.2015 **रोहिणी आराधना**	**माघ सुदि 4 का क्षय**
	19.01.2015 **पाक्षिक प्रतिक्रमण**	30.01.2015 **रोहिणी आराधना**	

श्री जिनसिंहसूरि स्वर्गवास दिवस	पौष सुदि 13(1674)	श्री धर्मनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 3
श्री अभिनंदनस्वामी केवलज्ञान कल्या.	पौष सुदि 14	श्री विमलनाथ दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 4
श्री धर्मनाथ केवलज्ञान कल्याणक	पौष सुदि 15	श्री जिनपद्मसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 5(1384)
गण. श्री सुखसागरजी स्वर्गवास दिवस	माघ वदि 4(1942)	श्री जिनसिंहसूरि आचार्य पद	माघ सुदि 5(1640)
श्री पद्मप्रभस्वामी च्यवन कल्याणक	माघ वदि 6	श्री जिनआनंदसागरसूरि आचार्य पद	माघ सुदि 5(2006)
श्री जिनकान्तिसागरसूरि जन्म दिवस	माघ वदि 11(1968)	श्री जिनउदयसागरसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 5(1988)
श्री शीतलनाथ जन्म-दीक्षा कल्याणक	माघ वदि 12	श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय आचार्य पद	माघ सुदि 6(1278)
श्री आदिनाथ मोक्ष कल्या. (मेरू तेरस)	माघ वदि 13	श्री जिनसागरसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 7(1661)
श्री श्रेयांसनाथ केवलज्ञान कल्याणक	माघ वदि 30	श्री अजितनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 8
श्री अभिनंदनस्वामी जन्म कल्याणक	माघ सुदि 2	श्री अजितनाथ दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 9
श्री वासुपूज्यस्वामी केवलज्ञान कल्या.	माघ सुदि 2	श्री जिनलब्धिसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 11(1370)
श्री विमलनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 3	श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि स्वर्गवास दिवस	माघ सुदि 11(1914)
		श्री अभिनंदन स्वामी दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 12

चातुर्मास विदाई समारोह

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 का इचलकरंजी नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हुआ। इचलकरंजी में ऐसा चातुर्मास कभी नहीं हुआ। ता. 5 नवम्बर 2014 को श्री मणिधारी दादावाडी संघ की ओर से विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें अलग अलग समाज के वक्ताओं ने पूज्यश्री के इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए कहा– पूज्यश्री को हम कभी नहीं भूल पायेंगे। इस अवसर पर पूज्यश्री ने, पू. मनितप्रभसागरजी म. ने एवं पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने अपनी भावप्रवण वक्तव्यों द्वारा इचलकरंजी संघ की भावभक्ति, एकता, श्रवण रूचि, धर्मश्रद्धा की सराहना की। संचालन संघ के सचिव रमेश लूंकड ने किया।

छह री पालित संघ संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 की परम पावन निश्रा में गढ सिवाना निवासी श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड परिवार की ओर से ता. 6 से 8 नवम्बर तक त्रिदिवसीय जीवित महोत्सव का आयोजन किया गया। दादा गुरुदेव की पूजा, सिद्धचक्र महापूजन एवं महावीर षट्कल्याणक पूजा पढाई गई। मातृ पितृ वंदना का अनूठा कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूज्यश्री ने जीवित महोत्सव की महिमा एवं रहस्य समझाते हुए मिच्छामि दुक्कडम् करवाया।

ता. 9 से 12 नवम्बर तक चार दिवसीय छह री पालित संघ का आयोजन किया गया। संघ शिरोडी सीमंधर धाम तीर्थ, वडगांव होता हुआ ता. 12 को कुंभोजगिरि पहुँचा। यात्रा की संपन्नता के पश्चात् संघ माला का विधान करवाकर छाजेड परिवार के श्रीमती पिस्ता देवी, श्री रिषभलालजी, मांगीलालजी, केसरीमलजी छाजेड परिवार को संघवी पद प्रदान किया गया। श्री कुंभोजगिरि तीर्थ ट्रस्ट, पदयात्री संघ, श्री जैन श्वे. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ, इचलकरंजी, राजस्थानी जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ इचलकरंजी, श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ इचलकरंजी, श्री तेरापंथ सभा, श्री स्थानकवासी सभा, छाजेड परिवार इचलकरंजी, नाकोडा युवक मंडल, जे. एफ. सी. भारतीय जैन संघटना आदि विविध संघों द्वारा संघपति परिवार का बहुमान किया गया। इस अवसर पर कुंभोजगिरि तीर्थ एवं संघपति परिवार की ओर से दीक्षार्थी संयम सेठिया एवं श्रीमती जयादेवी सेठिया का बहुमान किया गया।

With best compliment sfrom :

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

।। श्री विमलनाथाय नमः ।।
।। दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि सद्गुरूभ्यो नमः ।।
।। गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरूभ्यो नमः ।।

ईरोड (तमिल नाडू) नगरे

हमारे परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

संकल श्रीसंघ को स्नेह आमंत्रण

आशीर्वाद - पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पावन निश्रा - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

दिव्याशीष - पूज्या प्रवर्त्तिनी महोदया श्री विचक्षणश्रीजी म.
छत्तीसगढ़ शिरोमणि महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म.

प्रेरणादात्री - पूज्या प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.
पूज्या बहिन म. विदुषी साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म

मार्गदर्शन - शासनरत्न मनोजकुमार बाबुमलजी हरण सिरोही (राज.)

मांगलिक कार्यक्रम

परमात्मा व गुरूदेव का प्रवेश सह वरघोड़ा	अंजनशलाका	भव्य प्रतिष्ठा
सोमवार ता. 19.01.2015	मंगलवार ता. 20.01.2015	बुधवार ता. 21.01.2015

निमंत्रक

श्रीमती विमलादेवी जवाहरलाल
श्रीमती कंचनदेवी प्रदीपकुमार
श्रीमती अंकितादेवी शरदकुमार
पारख परिवार, लोहावट-राजीम-ईरोड़

शुभ स्थल
श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं
श्री जिनकुशल सूरि दादावाडी
101, बलयकार स्ट्रीट
ईरोड़ 638001 (त. ना.)
संपर्क - 9366681001, 9360181001

परम पूज्या मारवाड़ ज्योति साध्वी श्री

सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा.

को ५० संयम वर्ष पर

हार्दिक वंदना...बधाई...

आपश्री की स्नेहवृष्टि हम पर बनी रहे

साधनामय जीवन

जन्म	: सुशीला मालू
जन्मभूमि	: फलोदी
माता	: श्रीमती तेजाबाई
पिता	: श्री ज्ञानचंदजी मालू
जन्म	: वि.सं. 2005, दिनांक : 13 मई 1948, वैशाख सुदि 5
दीक्षा	: वि.सं. 2022 मिगसर सुदी 10 फलोदी
गुरू	: महत्तरापद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा.
साध्वी परिवार	: 14 साध्वीजी, हस्तदीक्षित 6
दर्शन आराधना	: राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, एम.पी., राजस्थान से उटी, कोडईकेनाल, कन्याकुमारी तक पदयात्रा लगभग भारतभर के सभी तीर्थ दर्शन की स्पर्शना, उक्त सभी प्रन्तो में चातुर्मास की आराधना करवाई
ज्ञान आराधना	: षट्काय, अमरकोष, लघुसिद्धान्त, सिद्धान्त कौमुदी, वृत्तरत्नाकर छंद, तर्क संग्रेह, हितोपदेश, धनंजयकोष,अभिधान चिन्तामणि कोष, संस्कृत प्राकृत सूत्रार्थ
तप आराधना	: अट्ठाई, 11,16,17,21 मासखमण, नवपदओली, अष्टापद ओली, 500 आयंबिल, वर्षीतप, कल्याणक, पखवास दूज, पांचम, अष्टमी, मौन एकादसी, चउदस, चैत्री पूर्णिमा, छहमासी, द्विमासी डेढ़मासी
शासन प्रभावना	: कई जगह छहरि पालित संघ, आपकी प्रेरणा से उपधान जिन मंदिर, दादावाडियां, उपाश्रय, तीर्थयात्रा संघ, सामुहिक वर्षितप, दीक्षाऐं, समाज एकता संगठन आदि पूज्याश्रीज के 50वें दीक्षा दिवस की अनुमोदनार्थ
स्वाभाविक गुण	: सहृदय, विनय, बहुमान, सरलमना, शांत स्वभाव, सहजता, संयम निष्ठा-संयम के प्रति जागरूकता, समन्वयता आदि अनेक गुणों से सराबोर है।

विनयावनत

ललितकुमार, राजकुमार, कैलाशकुमार, गौतमचन्द

मनीष, मिशाल, श्री भंवरलालजी संकलेचा परिवार

पादरू-चैन्नई-हैदराबाद

अक्कलकुआं में प्रवचन फरमाते हुए
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

शिलान्यास समारोह में उपस्थित जन समूह

स्व. श्री राणुलालजी डागा

श्रीमती धाईबाई डागा

अक्कलकुआं में पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में दादावाडी के खातमुहूर्त्त व शिलान्यास समारोह की झलकियां

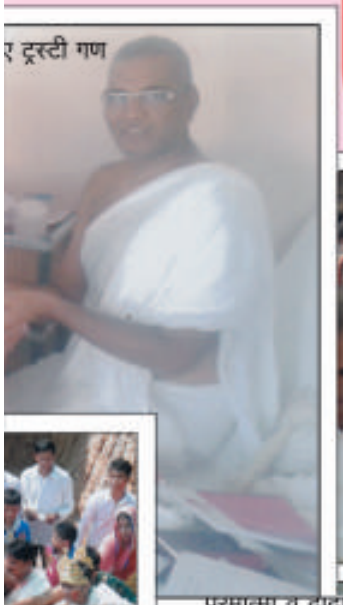

मुख्य शिला लाभार्थी

दादावाडी के भूमिदाता

परम पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री गुरूवर्या
श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया विदुषी साध्वी
श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. (बेबी म.सा.)
के 29 वें संयम वर्ष प्रवेश पर
(दीक्षा - वि. 2043 माघ वदि 1)
उनके ऐतिहासिक चातुर्मास के उपलक्ष्य में
हार्दिक अभिवंदन...अभिनंदन
निवेदक श्री जैन संघ
गुलाबनगर, जोधपुर

श्री व्यापारीलालजी

With best compliments from :-

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

31 दिसम्बर की शाम
दादा गुरु के नाम

आपका कार्यक्रम आपके द्वारा
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ (रजि.), जयपुर के तत्वावधान में

भाव भरा आमंत्रण

पावन निश्रा प.पू. सरल मना श्री चन्द्रकला श्री जी म.सा. एवं प.पू. सज्जनमणि श्री शशिप्रभा श्री जी म.सा.

दिनांक – 31 दिसम्बर, 2014

पार्श्वगायन में देश की
विख्यात कलाकार

'अनुराधा जी पोडवाल'

द्वारा

भक्ति संध्या

समय – रात्रि 7.00 बजे से

दिनांक – 1 जनवरी, 2015

दादा गुरुदेव की पूजा

बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक

'संजय विद्यार्थी'

एवं साथियों द्वारा प्रस्तुति

समय – प्रात : 10 बजे से

स्थान – जिन कुशल सूरि दादाबाड़ी, मालपुरा

गुरुसेवक : **चन्द्रप्रकाश प्रकाशचन्द्र लोढ़ा**, जयपुर

■ चन्द्रप्रकाश लोढ़ा – फोन : 9829554110 ■ प्रकाशचन्द्र लोढ़ा – फोन : 9414605867
■ अवनीश कुमार – फोन : 9829069434 ■ विजय लोढ़ा – फोन : 9829011773

पूज्य आचार्यश्री की 29वीं पुण्यतिथि मनाई गई

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 29वीं पुण्यतिथि जयसिंगपुर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में ता. 13 नवम्बर 2014 मिगसर वदि प्रथम सप्तमी गुरुवार को मनाई गई।

पूज्य मुनि मंडल एवं साध्वी मंडल का प्रात: 9 बजे नगर प्रवेश हुआ। तत्पश्चात् गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया। इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य गुरुदेव मणिप्रभसागरजी म. सा. ने कहा- पूज्यश्री का जीवन अपने आप में अनूठा और अद्‌भुत था। उनकी साधना में चमत्कार था। पूज्यश्री ने संस्मरण सुनाते हुए कहा- वे अत्यन्त कठोर थे और अत्यन्त मृदु थे। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह उनकी कृपा का ही परिणाम है।

पूज्यश्री ने भावुक होकर पूज्य आचार्यश्री के अन्तिम समय की व्याख्या की। उन्होंने कहा- पूज्य गुरुदेवश्री को अपने अन्तिम समय का बोध हो चुका था। इस कारण मिगसर वदि 6 के दिन ही उन्होंने मुझे, मनोज्ञसागरजी एवं उपस्थित श्री मोहनलालजी मुथा आदि श्रावकों के सामने अपने अन्तिम समय की घोषणा करते हुए कहा था- अब मेरा समय आ गया है। 20 घंटों का ही जीवन बचा है।

और हमारे देखते देखते वे हमें निराधार छोड कर चले गये। यह उनकी साधना का ही परिणाम था कि अग्नि संस्कार के समय उन्होंने अपना हाथ उठा कर सारी जनता को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने संचालन करते हुए पूज्यश्री की कई घटनाओं को सुना कर उनके चमत्कृत व्यक्तित्व के पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा- वे क्रान्तिकारी थे, वे राष्ट्रवादी थे, वे अध्यात्म जगत के सूर्य थे, वे जीवन की कला सिखाने वाले प्रखर प्रवचनकार थे, वे कवि थे, लेखक थे। ऐसा कोई भी गुण नहीं, जो उनमें नहीं था।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म. ने कहा- पूज्य आचार्यश्री शिल्पकार थे। उनकी सबसे बडी महान् रचना है- पूज्य गुरुदेव मणिप्रभसागरजी म.! जहाज मंदिर मांडवला पूज्यश्री की स्मृति में ही निर्मित हुआ है। इस अवसर पर इचलकरंजी दादावाडी संघ के पूर्व अध्यक्ष संपतराजजी संखलेचा, वर्तमान सचिव रमेशजी लूंकड, सौ. श्रीमती कविता ललवानी, भरतभाई ओसवाल जयसिंगपुर, रमेशजी चौधरी जयसिंगपुर आदि ने अपने विचार व गीत द्वारा पूज्य आचार्यश्री को अपनी भावभरी श्रद्‌धांजली अर्पण की।

सभा के प्रारंभ में पूज्यश्री की प्रतिकृति के सामने दीप प्रज्ज्वलन किया गया एवं पुष्पहार चढाया गया। समारोह के पश्चात् श्री छगनलालजी चौधरी रमणिया वालों की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इचलकरंजी, सांगली, मल्हारपेठ आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में लोग पधारे।

चेन्नई में माँ-बेटे की भागवती दीक्षा

चेन्नई नगर में नागोर निवासी श्री योगेशकुमारजी सेठिया की धर्मपत्नी श्रीमती जयादेवी एवं उनके सुपुत्र मुमुक्षु संयम कुमार सेठिया की भागवती दीक्षा वैशाख सुदि 7 शनिवार ता. 25 अप्रेल 2015 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न होगी। उनकी दीक्षा की जय इचलकरंजी में ता. 8 नवम्बर को बुलाई गई। श्रीमती जयादेवी व संयम ने पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से चतुर्विध संघ की साक्षी में विनंती की कि वे दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करें।

उसका भावप्रवण वक्तव्य सुनकर उपस्थित विशाल जन सभा मंत्र मुग्ध हो गई। संयम व उसकी मां ने अपने विचारों को अत्यन्त दृढता के साथ प्रस्तुत किया। दीक्षा की जय बुलवाने अपने परिजनों व धर्मनाथ मंदिर के आगेवानों के साथ इचलकरंजी पधारे।

मुमुक्षु जयादेवी सेठिया ने कहा- गुरुवरों का सानिध्य प्राप्त होने के कारण मैंने संसार की असारता का बोध प्राप्त करके मुझे तो संयम ग्रहण ही करना था। मैं अपने पुत्र को उस सुख का स्वामी नहीं बनाना चाहती, जो दुख में बदल जाता हो, अपितु मैं चाहती हूँ कि वह उस सुख को प्राप्त करे, जो कभी भी पीडा में परिवर्तित न हो। मुमुक्षु संयम ने कहा- इस संसार में लेने जैसा संयम ही है। पाने जैसा मोक्ष ही है। मेरी छोटी उम्र पर मत जाना। क्योंकि संयम का मापदण्ड उम्र से नहीं, संस्कारों और भावों पर है। और तभी तो पूर्व समय में छोटे छोटे मुनियों ने केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष पा लिया।

उसने कहा- दादा गुरुदेव आदि जितने भी महान् आचार्य हुए हैं, उन्होंने छोटी उम्र में ही दीक्षा ली थी। मैं भाग्यशाली हूँ जो मुझे पूज्य गुरुदेवश्री प्राप्त हुए। मैं अपनी मां को नमन करता हूँ, जिसने मुझे केवल पाल पोस कर ही बडा नहीं किया, अपितु मुझे जीवन की कला सिखाई। मुझे शाश्वत सुख का मार्ग दिखाया। पूजनीया गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. का मुझ पर अनंत उपकार है, जिन्होंने मुझे शिक्षा दी। ओ गुरुदेव! अब देर न करो, जल्दी से दीक्षा के शुभ मुहूर्त्त की उद्घोषणा करो। मैं वह तिथि सुनने के लिये बेचैन हूँ, जिस दिन मेरे जीवन में संयम का स्वर्णोदय होगा।

पूज्यश्री ने उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए वैशाख सुदि 7 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त की उद्घोषणा होते ही सकल संघ में आनंद व हर्ष का वातावरण छा गया। यह ज्ञातव्य है कि चेन्नई में धर्मनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 अप्रेल को होगी।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- संयम तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। संयम के कारण ही इन्द्र नरेन्द्र और चक्रवर्ती भी संत जनों के चरणों की धूल को माथे से लगाकर अपने जीवन में सुख और शांति का अनुभव किया करते हैं।

मुमुक्षु संयम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के पास एवं उनकी माताजी श्रीमती जयादेवी पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के पास संयम ग्रहण करेंगे। 12 वर्षीय मुमुक्षु संयम सेठिया ने पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, तीन भाष्य, पांच कर्मग्रन्थ, तत्वार्थ सूत्र, वीतराग स्तोत्र, संस्कृत आदि का अभ्यास किया है। उसने दो वर्ष पूर्व मात्र 10 वर्ष की उम्र में उपधान तप की आराधना की थी।

प्रवेश द्वार का उद्घाटन

श्री कुंभोजगिरि तीर्थ पर श्री नाकोडा भैरव, श्री माणिभद्रवीर, श्री पद्मावतीदेवी मंदिर के मुख्य द्वार का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में छह री पालित संघ के प्रवेश पर किया गया। इसका लाभ संघवी शा. माणकचंदजी विरदीचंदजी ललवानी परिवार सिवाना वालों ने प्राप्त किया।

हॉस्पेट में आराधना भवन का उद्घाटन कर्णाटक के राज्यपाल आयेंगे

हॉस्पेट नगर के एम.जे. नगर में शा. गिरधारीलालजी पालरेचा परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की परम पावन निश्रा में ता. 12 दिसम्बर 2014 को प्रात: 9 बजे कर्णाटक के राज्यपाल महामहिम श्री वजुभाई रूडाभाई वाला के करकमलों द्वारा संपन्न होगा।

यह ज्ञातव्य है कि लौहनगरी हॉस्पेट के एम. जे. नगर में श्री वासुपूज्य स्वामि जिन मंदिर, दादावाडी एवं श्रीमद् राजचन्द्र ध्यान मंदिर का निर्माण पूर्व में आप द्वारा ही स्वद्रव्य से करवाया गया था। उसकी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ही ता. 25 जनवरी 2008 को संपन्न हुई थी। उसके पास ही स्वद्रव्य से इस आराधना भवन का निर्माण करवाया गया है।

पूज्य गुरुदेवश्री 6 दिसम्बर को हुबली में अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह की संपन्नता के पश्चात् कोप्पल, गदग होते हुए ता. 12 को हॉस्पेट पधारेंगे। प्रवेश के साथ ही उद्घाटन समारोह संपन्न होगा।

श्री लूंकड परिवार का अभिनंदन

इचलकरंजी नगर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के यशस्वी चातुर्मास में संपूर्ण साधर्मिक वात्सल्य का लाभ लेने वाले पूज्य गुरुदेवश्री के सांसारिक चाचा श्री बाबुलालजी लूंकड परिवार का श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि जैन संघ इचलकरंजी की ओर से हार्दिक अभिनंदन किया गया। ता. 8 नवम्बर को श्री संघ द्वारा अभिनंदन पत्र अर्पण किया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री एवं सांसारिक पुत्री साध्वी पूजनीया डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने स्फटिक रत्न मयी प्रतिमा लूंकड परिवार को प्रदान की।

नवकार अनुष्ठान महापूजन सम्पन्न

जगदलपुर में परम पूज्य केवल्य धाम तीर्थ प्रेरिका प्रवर्तिनी महोदया निपुणा श्री जी म.सा. की सुशिष्या परम पूज्या राजेश श्री जी म.सा. के सानिध्य में 10 दिवसीय चौदह पूर्व का सार श्री नवकार अनुष्ठान महापूजन एवं अखण्ड जाप एकासना तप की आराधना के साथ किया गया। नवकार महापूजन में सकल श्री संघ जगदलपुर ने खूब आनन्द लिया। महापूजन विधिकारक श्री अरविन्द जी चोरडिया इन्दौर ने करवाया।

सूरत में नाकोडा भैरव महापूजन संपन्न

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. नवसारी के प्रभावक चातुर्मास के पश्चात् विहार कर सूरत पधारे। वहाँ उनकी निश्रा में 16 नवम्बर 2014 को श्री नाकोडा भैरव महापूजन का 108 जोडों के साथ भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन श्री भैरवसूट हाउस एण्ड कलश क्रियेशन वाले श्रीमती शांतिदेवी हुक्मीचंदजी भंसाली परिवार चेलक वालों द्वारा पूज्यश्री की प्रेरणा से किया गया। इस आयोजन में अपार भीड उपस्थित थी। इस महापूजन में संगीत की धूम मचाने के लिये मुंबई से सुप्रसिद्ध संगीतकार प्राची एण्ड पार्टी का आगमन हुआ था।

ईरोड में जिनमंदिर एवं दादावाडी का निर्माण

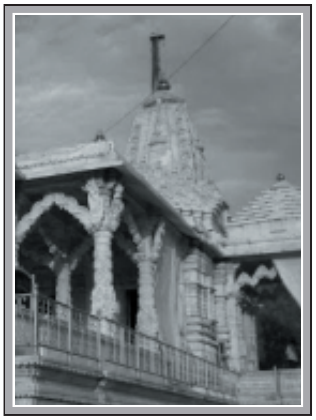

तमिलनाडु के ईरोड नगर में वलयकारा स्ट्रीट में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी का निर्माण होने जा रहा है।

इस मंदिर एवं दादावाडी का संपूर्ण निर्माण पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में मूल लोहावट निवासी जेठिया ग्रुप के श्री जवाहरलालजी प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख परिवार राजीम-ईरोड वालों की ओर से करवाया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेवश्री के दक्षिण प्रदेश के प्रवास को ख्याल में रखते हुए जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण शीघ्र गति से करवाया जा रहा है।

इस जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका ता. 21 जनवरी 2015 को माघ शुक्ल प्रतिपदा बुधवार को पूज्यश्री की पावन निश्रा में संपन्न होगी। इस प्रतिष्ठा हेतु पूज्यश्री का नगर प्रवेश 19 जनवरी को होगा। ता. 20 को वरघोडा निकाला जायेगा। ता. 21 को प्रतिष्ठा का विधान संपन्न होगा।

पेढी की जनरल मीटींग कन्याकुमारी में

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की साधारण सभा की बैठक ता. 27 फरवरी 2015 को दोपहर 2 बजे कन्याकुमारी में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा एवं पेढी के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में आयोजित होगी। कन्याकुमारी में श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर, दादावाडी एवं गुरुमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 27 फरवरी 2015 को प्रातः 8 बजे संपन्न होगी। पेढी के महामंत्री संघवी श्री वंशराजजी भंसाली ने बताया कि इस अवसर पर पेढी के समस्त सदस्यों से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

रिश्तों में दरारें पडती है, ताने कसने से।
परिवार उजड जाते हैं, पहले ही बसने से।।
संत के पास जाकर संत ने बन सको तो कोई बात नहीं,
पर शांत तो अवश्य बनो।
- मणिप्रभसागर

जलगांव में दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा

जलगांव में श्री सुमतिलालजी टाटिया परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित गृह मंदिर में अनंत लब्धि निधान गौतमस्वामी, दादा गुरुदेवश्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. एवं पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. जिनज्योतिश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में मिगसर वदि 4 ता. 10 नवम्बर 2014 को संपन्न हुई।

ता. 9 नवम्बर को दादा जिनकुशलसूरि की जन्म जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने गुरुदेव के दिव्य व्यक्तित्व का विस्तार से विवेचन किया। इस उपलक्ष्य में दादा गुरुदेव का महापूजन पढाया गया। प्रतिष्ठा के दिन टाटिया परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

दिल्ली चातुर्मास सम्पन्न

श्री पार्श्वमणि तीर्थ उद्धारिका प.पू. गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. ने अपने साध्वी मण्डल सहित दिनांक 10 नवम्बर 2014 को जैन खरतरगच्छ समाज (रजि.) चांदनी चौक दिल्ली से अपना वर्षावास सम्पूर्ण कर चैन्नई के लिये विहार प्रारंभ किया।

इससे पहले दिनांक 8 नवम्बर 2014 शनिवार को विदाई समारोह का आयोजन जैन खरतरगच्छ भवन में किया गया जिसमें समाज की ओर से गुरूवर्या व समस्त साध्वी मण्डल का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया, जिन्होंने हमारे समाज में धर्म के प्रति एक अनूठी चेतना जगाई है। समय समय पर नये-नये कार्यक्रमों द्वारा समाज को ऐसी दृष्टि प्रदान की। जिससे समाज में जिनशासन के प्रति प्रभावना में और अभिवृद्धि हुई है। समाज ने गुरूवर्याश्री को विश्वास दिलाया कि उनके द्वारा संचार की गई ज्ञान की रोशनी को हम क्षीण नहीं पडने देंगे।

श्री मणिधारी विचक्षण महिला मण्डल, श्री नरेन्द्र नाहर, श्री रवि चौरडिया, श्रीमती नीता नाहटा, श्रीमती काजल नाहटा, सुश्री दिव्या कोठारी आदि द्वारा गाये गए विदाई गीतों ने वहाँ उपस्थित जनसमुह की आँखें नम कर दी।

इसके बाद श्री हीरालाल मुसरफ, श्रीमती गुलाब कंवर नाहटा, श्री निहालचन्द जैन हालावाले, श्री जितेन्द्र राख्यान, श्री रजत जैन, श्रीमती वंदना सुजन्ती आदि ने गुरूवर्या व साध्वी मण्डल के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

इस मौके पर इन्दौर व छत्तीसगढ़ से विशेष तौर पर पधारे श्री जैन खरतरगच्छ संघ के पदाधिकारियों का जैन खरतरगच्छ समाज द्वारा बहुमान किया गया। गुरूवर्याश्री की आज्ञानुसार चातुर्मास में कार्यरत सभी कर्मचारियों का भी बहुमान किया गया। श्री मणिधारी विचक्षण महिला मण्डल को पिछले 25 वर्षों से समाज की निस्वार्थ सेवा करने के लिये पुरस्कृत किया गया।

अंत में गुरूवर्याश्री की आज्ञा लेकर चातुर्मास समिती 2014 द्वारा श्री हीरालाल जैन मुसरफ को उनके खरतरगच्छ संघ के प्रति समर्पण भाव, उदारता, सरलता के अनुमोदनार्थ प्रतीक चिन्ह व प्रशस्ती पत्र प्रदान किया गया। इस मौके पर उनके द्वारा खरतरगच्छ समाज के उत्थान में किये गऐ कार्यों के लिऐ गुरूवर्याश्री ने उन्हें 'खरतरगच्छ रत्न' की उपाधि प्रदान की।

प्रेषक- मनीष नाहटा, संयोजक चातुर्मास समिती 2014

तिरूपात्तुर से छः री पालित संघ का सफल आयोजन

पूजनीया गुरुवर्या महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मयुरप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. की निश्रा में गुप्त गुरूभक्त परिवार द्वारा आयोजित तिरुपात्तुर से सुशीलधाम का छःरी पालित संघ उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

दिनांक 09.11.2014 को प्रातः दादा गुरूदेव जन्म जयन्ती का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। भक्तामर, इकतीसे का पाठ, स्नात्रपूजा, सिद्धचक्र महापूजन और दादा गुरुदेव की बडी पूजा पढाई गई। प्रवचन में दादा गुरुदेव की महिमा बतायी गयी। रात्रि में राजीव विजयवर्गीय के साथ भव्य दादागुरू भक्ति का कार्यक्रम रखा गया।

दिनांक 10.11.2014 को सुबह शुभ मुहूर्त में पाटला पूजन, नवग्रह पूजन, भक्तामर, दादागुरू इकतीसा, चैत्यवंदन के तत्पश्चात् गुरूवर्याश्री से मांगलिक श्रवण से श्री संघ का उल्लास चरम पर था। परमात्मा एवं दादा गुरूदेव को रथ में बिराजित करके हाथी, घोडा रथ, शहनाई के साथ शुभ मुहूर्त में छः री पालक संघ उल्लास पूर्वक प्रस्थित हुआ। जो 13 किलोमीटर की यात्रा कर प्रथम पड़ाव पर पहुँचा। जहां स्नात्र पूजा आदि नित्यक्रम आयोजित हुये। दूसरे दिन बरगुर के लिए संघ का प्रस्थान हुआ। मार्ग में 5 किलोमीटर पर कवाड परिवार की ओर से कवाड विहार धाम का भव्य उद्घाटन एवं चांदी के सिक्के से सभी यात्रिकों का बहुमान किया गया।

तीसरे दिन संघ कृष्णगिरि पहुँचा। कृष्णगिरि संघ ने साध्वीजी व यात्रियों को भव्य सामैया एवं संघ पूजन कर उल्लास पूर्वक बधाया। कृष्णगिरि में प्रातः 10 बजे 108 जोडों से श्री उवसग्गहरं महापूजन पढाया गया। चौथे दिन कृष्णगिरि से 7 किलोमीटर पर विहार धाम का भूमिपूजन करवाया गया।

आराधना साधना के साथ गति करता हुआ संघ सातवें दिन सुशीलधाम पहुँचा। पू. पन्यास श्री अरूणविजयजी म. सा. संघ को बधाने एवं चतुर्विध संघ के साथ भव्य प्रवेश हुआ। 10 बजे संघ क्रिया एवं सोने के सिक्के से यात्रियों का बहुमान किया गया। बैंगलुर चैनई, वेलुर, कडलुर, पांडिचेरि, ऊटी, वानियमवाडी इत्यादि संघों से अनेक भक्त जन पधारे व संघ की अनुमोदना की। अन्त में प.पू. निश्राप्रदाता मयूरप्रियाश्रीजी म. ने अपना उद्बोधन देते हुए क्षमायाचना की।

-ललित कवाड़ तिरूपात्तुर

'जैन समाज डायरेक्ट्री बाड़मेर शहर' का हुआ विमोचन

जैनम् पच्चीसी कार्यसमिति, बाड़मेर द्वारा प्रकाशित **'जैन समाज डायरेक्ट्री बाड़मेर शहर'** का विमोचन समारोह 16-11-14 को गोलेच्छा-डूंगरवाल ग्राउण्ड में राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्री एन.के.जैन के मुख्य आतिथ्य, बाड़मेर के लोकप्रिय विधायक मेवाराम जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

विधायक मेवाराम जैन ने कहा कि हमें संगठित होकर आगे बढ़ने की जरूरत है। हमें सकारात्मक सोच एवं समाज की एकता के लिए कार्य करने चाहिए । विधायक ने कहा कि कार्यसमिति का यह कदम बेहद ही अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। इस अवसर समाज के कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

-मुकेश बोहरा

छोटी दादाबाड़ीः 400 वीं वर्षगांठ

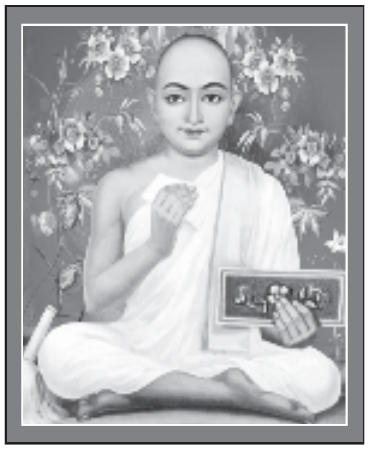

दिल्ली की छोटी दादाबाड़ी में स्थित जिनालय में प्रतिष्ठित 22 वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजी की प्रतिमा की अंजनशलाका की 400 वीं वर्षगांठ व दादाबाड़ी में तृतीय दादागुरू श्री जिनकुशलसूरिजी के चरणों की प्रतिष्ठा की 200 वीं वर्षगांठ का महोत्सव मनाने के लिए त्रि-दिवसीय समारोह रखा गया। इस महोत्सव में निश्रा पूज्य मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म. व सानिध्य पूज्य सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 12 तथा साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा 2 का रहा।

प्रथम दिन 14 नवम्बर 2014 को अरिहन्त वंदनावली महापूजन, दूसरे दिन 15 नवम्बर 2014 को दादा गुरूदेव महापूजन था। उसी दिन दोनों ही शताब्दी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में डाक विभाग द्वारा एक विशेष आवरण जारी किया गया। युवा सांसद श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा व चतुर्विध संघ की उपस्थिति में श्री अशोक कुमार, डायरेक्टर नई दिल्ली जी.पी.ओ. ने विशेष आवरण का विमोचन किया। समारोह का कुशल संचालन श्री वीरेन्द्र जी मेहता ने किया।

तीसरे दिन 16 नवम्बर, 2014 को चांदी के रथ में परमात्मा का भव्य वरघोड़ा एवं दादा गुरूदेव की पालकी हाथी घोड़ों के साथ बड़े धूमधाम से निकाली गई। वरघोड़ा में मुमुक्षु श्री भंवरलाल दोसी, संयम सेठिया, जया बहन सेठिया व शिल्पा बहन नाहर रथों में बैठकर सम्मिलित हुए। विशाल धर्म सभा में मुमुक्षु भाई बहनों के बहुमान का कार्यक्रम रखा गया। धर्म सभा में उपरोक्त खरतरगच्छीय साधु-साध्वियों के अलावा स्थानकवासी आचार्य सम्राट परम पूज्य श्री शिवमुनिजी आदि ठाणा, तेरापंथ मुनि श्री उदितकुमारजी ठाणा, साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी आदि ठाणा-3, साध्वी डॉ. शिवाजी आदि ठाणा-5, साध्वी चन्द्रयशाश्रीजी आदि ठाणा-2 का सानिध्य व उद्‌बोधन प्राप्त हुआ एवं मुमुक्षु गणों का वक्तव्य सम्पन्न हुआ।

साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान

पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी को उनके शोध ग्रंथ 'द्रव्य गुण पर्याय नो रास : एक दार्शनिक अध्ययन' पर डॉक्टरेट की उपाधि डॉ. सागरमल जी जैन द्वारा प्रदान की गयी। समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण राज्य मंत्री थे। दिल्ली के सभी संघ व संघ प्रमुखों की उपस्थिति रही। श्री जितेन्द्र राक्यान ने सभी आगत महानुभावों का स्वागत किया एवं दादाबाड़ी के इन ऐतिहासिक क्षणों में सहभागिता करने के लिये धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा का कुशल संचालन श्री वीरेन्द्र जी मेहता ने किया।

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित दादावाडी

हुबली नगर में प्रतिष्ठा निमित्त भव्य प्रवेश संपन्न

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की शिष्या दादावाडी प्रेरिका मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का हुबली नगर में भव्य नगर प्रवेश ता. 28 नवम्बर को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर संघ की विनती को स्वीकार कर पूज्य पंन्यास श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा 3 भी उग्र विहार कर पधारे।

परमात्मा आदिनाथ आदि जिन बिंब, दादा गुरुदेव बिंब, देवी देवताओं की प्रतिमाओं के साथ वरघोडे का प्रारंभ अरिहंत नगर केशवापुर से हुआ जो हुबली के विभिन्न प्रमुख मार्गों से गुजरता हुआ दादावाडी प्रांगण में पहुँचा। शोभायात्रा एक कि.मी. से अधिक लम्बी थी और चारों तरफ विशाल जनसमूह नजर आ रहा था। इस शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाई बेलगावी बेलूर मठ के अधिपति संत श्री निजगुणानंदस्वामी एवं स्थानीय विधायक श्री प्रसाद अभय्या ने!

प्रवेश के साथ ही विनीता नगर, कुशल नगर, कांति मणि नगर का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा- दुख में जब कोई हम पर छोटा सा उपकार करता है, तो हम जीवन भर नहीं भूलते। दादा गुरुदेव ने हमारे पूर्वजों को जैन बनाकर जीवन जीने की जो कला दी है, जो धर्म दिया है, उस उपकार को हम कैसे भूल सकते हैं! दादावाडी हमारे अन्तर्भावों की कृतज्ञता का परिणाम है।

ज्ञान ध्यान आदि का कार्य करने वाले तो अनेक आचार्य हुए पर दादा गुरुदेव का संबोधन प्राप्त करने वाले हमारे उपकारी चार आचार्य ही हुए हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- दादावाडी का जो परिसर भक्ति, शक्ति और मुक्ति की खुश्बू से महक रहा है, वह प्रभु कृपा, गुरु अनुग्रह और साध्वीश्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा

व पुरूषार्थ का परिणाम है।

इस भूमि को तीर्थ समान बताते हुए कहा- जहाज मंदिर मांडवला में पूज्य गुरुदेवश्री के गुरुदेव आचार्यश्री का स्वर्गवास हुआ था तो इस भूमि में पूज्य गुरुदेवश्री के सांसारिक पिताश्री एवं मेरे ताऊजी श्री पारसमलजी का स्वर्गवास हुआ था। 'मणि' की कान्ति पारस की कान्ति के कारण है।

इस अवसर पर पंन्यास श्री महेन्द्रसागरजी म., पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म., मुमुक्षु प्रिंसी कवाड, शुभम् लूंकड, पुखराजजी संघवी, पुखराज कवाड आदि ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये। मधुवन बालिका मंडल ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया।

प्रसिद्ध बाल कलाकार संयम नाबेडा हैदराबाद ने अपने अनूठे अंदाज में सुरीले कण्ठ से जब गीत-संगीत का जादू बिखेरा तो जन समूह झूमने पर मजबूर हो गया।

ता. 30 को कुंभस्थापना आदि विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर कर्णाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बी.एस. येडियुरप्पा, हुबली सांसद एवं कर्णाटक भाजपा अध्यक्ष श्री प्रह्लादजी जोशी, पूर्व मंत्री श्री बसवराज बोम्मई का आगमन हुआ। उन्होंने पूज्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण किया। प्रतिष्ठा समिति के संयोजक श्री रमेश बाफना आदि ने उनका बहुमान किया। जिन मंदिर दादावाडी के दर्शन कर उन्होंने अपने अन्तर की प्रसन्नता व्यक्त की।

श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी इन्दौर का जीर्णोद्धार

प्रवचनकार महोपाध्याय श्री ललितप्रभ सागरजी म. सा. प.पू. चंद्रप्रभसागरजी म.सा. तथा महत्तरापद विभूषिता श्री विनीताश्री म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में रामबाग स्थित श्री जिनकुशलसूरी दादावाड़ी का भव्य जीर्णोद्धार व खनन कार्यक्रम ता. 13 अक्टूबर को शुभ मुहूर्त में संपन्न हुआ। उपस्थित साधर्मिक महानुभावों ने खनन किया। इस मौके पर बंगलौर, चैन्नई, मुंबई, जोधपुर, दिल्ली, जयपुर से आये दादा गुरू के भक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

यह जानकारी दादावाड़ी संस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश मालू एंव सचिव जितेन्द्र सेखावत ने देते हुए बताया कि रामबाग स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी को भविष्य में भव्य रूप प्रदांन किया जायेगा। जिसका मॉडल अहमदाबाद से बनकर आ गया है। अगले दो वर्षो में शुद्ध उच्चतम क्वालिटी के संगमरमर के पत्थरों से एक ऐसी आकर्षक दादावाड़ी बनेगी, जिसकी खासियत यह भी होगी कि इसके बीच में कोई पिलर नहीं होगा।

इस अवसर पर शासन रत्न श्री मनोजकुमार बाबूलालजी हरण विधि विधान करवाने पधारे थे। दादा गुरूदेव की पूजा का आयोजन किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम के लाभार्थी थे श्रीमान श्रेष्ठिवर्य मुकनचंदजी उमरावकंवरजी मेहता। इस मौके पर कार्यक्रम संयोजक श्री हेमन्त कुमार लसोड़ श्री अशोक कोठारी श्री विजयं मेहता, श्री चंदनमल चौरडिया, श्री विमल छजलानी, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री डूगरचंद हुंडिया, अशोक, प्रकाश ठाकुरिया, शांतिप्रिय डोसी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

अर्हत् चैत्य अर्हत् बिम्ब रिजल्ट

बेल्लारी श्री पार्श्वनाथ आराधना भवन के तत्वावधान में प.पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरूवर्या श्री सुलोचना श्री जी म.सा. महातपस्वी प.पू. सुलक्षणा श्री जी म.सा. की सुशिष्या प.पू. प्रियस्मिता श्री जी म.सा. प.पू. डॉ. प्रियलता श्री जी म. सा. डॉ. प्रियवंदना श्री जी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन निश्रा में अर्हत चैत्य अर्हत बिम्ब ऑपन बुक एग्जाम के रिजल्ट की घोषणा का सुन्दरतम कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें डायमंड विजेता, गोल्डन विजेता, सिल्वर विजेता, प्लेटिनम विजेता, टाइटेनियम विजेता मेरिट एवं सान्त्वना पुरस्कार का सम्पूर्ण लाभ श्री नमिनाथ जैन श्री संघ कडप्पा ने लिया।

डॉ. प्रियवंदना श्री जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया- आज हमारी युवा पीढी संस्कारों से पतनोन्मुखी हो रही है, संस्कार हमारी भारतीय संस्कृति का प्राण है। इस संस्कार को स्थायी रूप देने के लिए ऐसे संत और साहित्य की परम आवश्यकता है। ऐसे साहित्य सर्जन जीवन का रूपान्तरण कर बाध्य से अध्यात्म की उपलब्धि करता है। डॉ. प्रियलता श्री जी का अथक प्रयास अनुमोदनीय है। डॉ. प्रियलता श्री जी म.सा. ने कडप्पा श्री संघ को साधुवाद देते हुए कहा- ये अर्हत् चैत्य अर्हत् बिम्ब जीवन की राह को उजाले से जगमगाने वाली सर्चलाईट है।

आज के इस प्रतिस्पर्धि युग में यह चिंतन का विषय है। स्वस्वरूप की विस्मृति से स्व स्मृति की जागृति हेतु ये ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है। 6 मुमुक्षुओं का जुलूस अभिनंदन सांजी आदि कार्यक्रम बहुत शानदार रहा। अर्हत चैत्य के प्रथम विजेता-श्रीमती शशिजी दिनेशजी बेल्लारी, द्वितीय विजेता- कुसुम जी फोफलिया जयपुर, तृतीय विजेता प्रमिला जी विरेन्द्रजी इन्दौर, चतुर्थ विजेता समता जी मदनजी गुंटकल, पंचम विजेता सरोज जी गोलेच्छा राजनांदगांव, मेरिट में ललिताजी लुंकड बेल्लारी, मालाजी कडप्पा, प्रतिमाजी पुने, ईना जयपुर, वंदनाजी कडलूर हेमलताजी अहमदनगर, सुनिताजी जयपुर, लीलाबेन आदोनी, निखिल मोहन रत्नेश जोधपुर, भारतीजी जियांगज आदि विजेता बने। प्रथम विजेता शशिजी ने आगामी प्रकाशन के लिये अपनी राशी समर्पित की। बेल्लारी संघ ने बाहर से पधारने वाले अतिथियों का सम्मान किया। मंच संचालन पं. सुभाषजी ने किया।

सादर श्रद्धांजली

महोपाध्याय श्री विनयसागरजी का ता. 30 नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने जिन शासन व खरतरगच्छ के साहित्य को प्रकाश में लाने का भगीरथ कार्य किया। वे संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं के विशिष्ट ज्ञाता थे। उन्होंने सैंकडों ग्रन्थों का लेखन, संपादन व संशोधन किया। उनके स्वर्गवास से गच्छ व शासन ने एक विद्वान् व्यक्तित्व खो दिया है। जहाज मंदिर परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित करता है।

मूल मजल वर्तमान में नंदुरबार निवासी श्री तखतमलजी सालेचा का ता. 2 दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे शासन निष्ठ श्रावक थे। पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के नंदुरबार चातुर्मास में संपूर्ण साधर्मिक भक्ति का लाभ उन्होंने प्राप्त किया था। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के चातुर्मास में भी वे आगेवान थे। वे अत्यन्त उदारमना धार्मिक प्रकृति के सुश्रावक थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

बाडमेर निवासी श्री मगराजजी जैन का स्वर्गवास हो गया। उनको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वे कुशल वाटिका बाडमेर के प्रथम महामंत्री थे। उन्होंने नेहरू युवक केन्द्र से जुडकर मानव समाज के हित में बहुत कार्य किया था। अत्यन्त सरल स्वभावी श्री जैन सा. रचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि रखते थे। उनके स्वर्गवास से समाज को बहुत क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

उपधान तप महाआराधना जारी

चौहटन। पूज्य आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य–प्रशिष्य पूज्य मुक्तिप्रभ सागरजी एवं पूज्य मनीषप्रभ सागर जी म.सा. की पावन निश्रा में दिनांक 19.11.2014 को प्रारम्भ हुए पंचमंगल महाश्रुत स्कन्ध उपधान तप आराधना के तहत् चौहटन में धर्म आरधना और तपस्या की अविरल सरिता बह रही है जिससे कस्बे में आए दिन साधु–साध्वी भगवंतों का इस महाराधना में अपनी ज्ञान गंगा और जिनवाणी का संदेश देने हेतु चौहटन में प्रवेश जारी है। पूज्य कल्पलता श्रीजी म.सा., ,पूज्य डॉ. साध्वी सौम्यगुणा श्रीजी म.सा., पूज्य शीलांजना श्रीजी म.सा.,पूज्य मुक्तिरत्ना श्रीजी म.सा., आदि ठाणा अपनी सानिध्यता प्रदान कर रहे है। इस उपधान महातप में कुल 143 श्रावक–श्राविकाऐं जुड़कर संयम, तप आराधना कर मोक्ष का अनुगामी बनने का मार्ग प्रशस्त कर रहे है। उपधान तप समिति के समस्त सदस्य एवं जैन श्री संघ चौहटन इस तप में समस्त व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित कर रहेहैं।

राजस्थानी जैन समाज का स्नेह संमेलन तथा परिचय पुस्तिका विमोचन कार्यक्रम संपन्न

सांगली प्रतिनिधी : महावीर भन्साळी : श्री राजस्थानी जैन सेवा समाज का स्नेह संमेलन तथा सांगली, मिरज, माधवनगर की परिचय पुस्तिका का विमोचन कार्यक्रम दि. १४ नवंबर २०१४ को आदिनाथ जैन देहरासरमें श्री मरुधरमणी उपाध्याय प्रवर मणिप्रभसागरजी महाराज साहेब की शुभनिश्रा में संपन्न हुआ। इस समारोह में सांगली, मिरज, माधवनगर के सभी संप्रदायके परिवारोंकी उपस्थिती रही। संमेलन का प्रारंभ राकेश सोलंकी के मंगलाचरण प्रस्तुती द्वारा हुआ। मंच संचालन महावीर भन्साळी तथा तिर्थराज छाजेड ने किया। तत्पश्चात चंपालालजी जैन, महावीरजी छाजेड, रेखराजजी मेहता, पृथ्वीराजजी पोमाणी और रमेशजी मेहताने संगठनके प्रती अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। भविष्य मे समाज का मजबूत संगठन बनाने और सामाजिक और धार्मिक कार्य सहीत अनेक उपक्रम हाथ में लेने का भाव भी व्यक्त किया। उसके बाद गुरुदेवश्री ने अपनी मधूर वाणी से अपने प्रवचनमें धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमोंका समन्वय कर जैन एकता को संगठीत कर विश्व में जैन धर्म का परचम फैलाने को कहा। संगठनके माध्यमोंसे शिक्षण संस्थाअे खोलकर शिक्षण के साथ जैन तत्व और जैन विज्ञानोंके संस्कारोंसे अपने बच्चों और युवाओंको जोडा जाए, इस विषयपर समाज को गहन अध्ययन कर इस क्षेत्र में जुडने को कहा। गुरुदेव के हृदयस्पर्शी प्रवचनसे सभी मंत्रमुग्ध हो गए। अन्त में नगराजजी छाजेड ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रमके पश्चात स्वरुची भोजन का सभीने आनंद लिया।

श्री द्वाराकादास डोसी अध्यक्ष चुने गये

महावीर छात्रावास एवं शिक्षण संस्थान चौहटन की साधारण सभा की बैठक आसूलाल धारीवाल की अध्यक्षता में श्री शांतिनाथ जिनालय पेढी में हुई, जिसमें वर्तमान प्रबन्ध कार्यकारिणी का कार्यकाल पूरा होने पर नई कार्यकारिणी गठित की गई। इसमें श्री द्वाराकादास डोसी को अध्यक्ष, श्री शंकरलाल धारीवाल को उपाध्यक्ष, श्री गौतम भंसाली को मंत्री, श्री जगदीशचन्द्र सेठिया को कोषाध्यक्ष तथा श्री सोहनलाल डोसी को उपमंत्री समस्त सदस्यों ने सर्वसम्मति से मनोनित किया। प्रबन्ध कार्यकारिणी में अन्य सदस्यों को शामिल करने के लिए अध्यक्ष के विवेकाधीन रखा गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री द्वारकादास डोसी ने भरोसा दिलाया कि सभी के सहयोग से संस्थान के भवन निर्माण के कार्य को अविलम्ब प्रारम्भ करवाया जायेगा। उन्होंने सबके सहयोग की अपील की।

नंदुरबार में विदाई समारोह का आयोजन

पूजनीया माताजी म.श्री रतनमालाश्री जी म.सा. एवं प. पूज्या बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. आदि के चातुर्मास समापन अवसर पर मूर्तिपूजक जैन श्री संघ नंदुरबार द्वारा भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ श्री मणिधारी बालिका मंडल के गीत द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम में श्री बाबुलालजी तातेड़ श्री महेन्द्रकुमारजी तातेड़, विजय कोचर, राजु बाफणा, मणिधारी महिला परिषद् आदि ने अपने चातुर्मासिक अनुभव प्रस्तुत करते हुए गुरूवर्या श्री के प्रति अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त की। इसी कार्यक्रम में गुरूवर्या श्री की प्रेरणा से स्थापित मणिधारी बालिका मंडल ने एक छोटी सी नाटिका प्रस्तुत करते हुए उपस्थित जनता का आशीर्वाद प्राप्त किया।

अंत में वरिष्ठ समाज सेवी एवं शासनभक्त श्री पुखराज जी श्री श्रीमाल ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा-मैंने इस चातुर्मास की अवधि में आप गुरूजनों से बहुत कुछ सीखा है। यद्यपि महाराजश्री इस क्षेत्र की जनता के लिये नये थे पर उन्होंने अपने स्नेहिल व्यवहार से अपनी एक अमिट छाप अंकित की है। हमें विश्वास हैं आपश्री बहुत जल्दी पुनः इस क्षेत्र में अपने प्रवचनों की धारा प्रवाहित करेंगे।

पूजनीया गुरूवर्या श्री ने अंत में कहा-नंदुरबार में मेरा यह चातुर्मास जितना संघ के लिये अकल्पित था उतना ही मेरे लिये भी। परन्तु नंदुरबार की जनता ने मुझे जितना स्नेह, अपनत्व एवं श्रद्धा दी, वह मेरे लिये बहुत मूल्यवान है। संघ ने सदैव मेरी व्यवस्थाओं को स्वीकार करते हुए मेरी आराधना में सहयोग दिया। प.पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के आदेश से मुझे इस क्षेत्र में आने का अवसर मिला। इस क्षेत्र में मुझे भरपूर समाधि मिली। विदाई कार्यक्रम का संचालन मनाली बाफणा ने किया। 7 नवम्बर 2014 को सूर्योदय की पहली किरण के साथ ही पूजनीया गुरूवर्या श्री का मणिधारी भवन से अक्कलकुआ की ओर प्रस्थान हुआ। प्रथम पड़ाव 7 कि.मी पर था। वहाँ सकल संघ के अल्पाहार की व्यवस्था श्री तखतमलजी केशरीमलजी सालेचा परिवार द्वारा आयोजित थी। श्री सालेचा के अल्पाहार आयोजन की भव्यता देखकर वहाँ पहुँचा हर कोई व्यक्ति उनकी उदारता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा।

सिवांची भवन का खात मुहूर्त्त

श्री सिवांची संघ हुबली के तत्वावधान में दादावाडी परिसर के पास ही सिवांची भवन का खात मुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल के सानिध्य में ता. 1 दिसम्बर को किया गया। जिसका लाभ पादरू निवासी श्री अशोककुमारजी गौतमचंदजी जयन्तिलालजी गोलेच्छा परिवार द्वारा लिया गया। इस अवसर पर भवन हेतु श्रद्धालुओं द्वारा कमरों का लाभ लिया गया। उनका बहुमान किया गया।

नगर पालिका बाडमेर के चेयरमेन श्री बोथरा बने

बाडमेर नगर पालिका के चुनाव में श्री लूणकरणजी बोथरा चेयरमेन चुने गये। श्री बोथराजी श्री कुशल वाटिका बाडमेर के सक्रिय ट्रस्टी है। वे श्री नाकोडाजी तीर्थ के भी ट्रस्टी है। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक बधाई अर्पण करता है।

एक ऐतिहासिक भूल

मुनि मनितप्रभसागर

सूरत नगर में एक अनुमोदनीय प्रसंग बना है। 45 मुमुक्षुओं की सामूहिक दीक्षा का एक अनूठा आयोजन संपन्न हुआ। जिन शासन में एक कीर्त्तिमान बना। आयोजक परिवार की ओर से हमारे पास भी विनंती पत्र पहुँचा। पढकर अत्यन्त अनुमोदना का भाव पैदा हुआ। पर प्रचारित किये जा रहे एक तथ्य की ओर मैं ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा।

यह लगातार प्रचारित किया गया कि पिछले 500 सालों के इतिहास में सामूहिक रूप से 45 दीक्षाऐं पहली बार हो रहा है। यह तथ्य इतिहास के अनुकूल नहीं है।

इतिहास के दस्तावेज स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं कि पिछले सौ दो सौ वर्ष पहले सामूहिक दीक्षाओं का अनूठा आयोजन हुआ था। इस प्रश्न का उत्तर कि क्या पूर्व में इतनी विशाल संख्या में मुमुक्षुओं की दीक्षा एक साथ हुई है, इतिहास के स्वर्णिम पत्रों में अंकित है।

जिन शासन जयवंता है। संयम शासन का प्राण है। बिना दीक्षा के न तो संघ का अस्तित्व हो सकता है, न धर्म का!

जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार का आधार उसकी आचार संहिता है। और इसी श्रमण संस्था में हजारों हजारों दीक्षाऐं संपन्न हुई है।

यदि हम प्राचीन इतिहास टटोलें तो शासन के सितारे प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. का नाम दीक्षा प्रदाता के रूप में सिरमौर नजर आता है। उन्होंने एक ही दिन में 500 पुरूषों व 700 महिलाओं को दीक्षित करके एक अनोखा कीर्तिमान बनाया था। इतिहास में ऐसा उदाहरण दुर्लभ है।

खरतरगच्छ दीक्षा नंदी की विस्तृत सूची के अनुसार वि. 1776 पौष सुदि पंचमी को बीकानेर में गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनसुखसूरि महाराज ने एक साथ 67 युवाओं को दीक्षित किया था। यह संख्या मात्र पुरूषों की है। इनके साथ जिन श्राविकाओं ने दीक्षा ली, वह संख्या यदि जोडें तो आंकडा तीन अंकों में होगा।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनहर्षसूरि महाराज ने वि. 1861 में चैत्र सुदि 10 को सिणधरी नगर में एक साथ 44 पुरूषों को दीक्षा देकर शासन की आन बान शान में वृद्धि की थी।

इसी प्रकार आज से 204 वर्ष पूर्व वि. 1867 चैत्र सुदि अष्टमी को इन्हीं आचार्य प्रवर श्री जिनहर्षसूरि महाराज ने जैसलमेर में एक साथ 56 पुरूषों को दीक्षित किया था।

वि. सं. 1741 में सांचोर नगर में गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने पौष सुदि सप्तमी को एक साथ 51 दीक्षाऐं प्रदान करके गच्छ व शासन की महिमा का विस्तार किया था।

इन घटनाओं के आलोक में स्पष्ट है कि जिन शासन गौरवपूर्ण घटनाओं का एक अक्षय कोष है। उसी परम्परा में 45 पुरूष व महिलाऐं दीक्षाओं के सामूहिक आयोजन को वर्तमान काल की विशिष्ट उपलब्धि कहा जा सकता है। पर यह कहना औचित्यपूर्ण नहीं है कि ऐसा आयोजन 500 वर्षों के सुदीर्घ इतिहास में प्रथम बार हो रहा है।

मिच्छामि दुक्कडम् के साथ!

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. पू. नयज्ञसागरजी म. सूरत से विहार कर पालीताना पधार रहे हैं। वे 18 दिसम्बर के आसपास पालीताना पहुँचेंगे। वहाँ बिराजमान अपने सांसारिक भ्राता पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. को शाता पूछेंगे। 5-7 दिनों की स्थिरता के पश्चात् अहमदाबाद की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. इचलकरंजी से विहार कर पूना, कल्याण, सूरत, बडौदा होते हुए अध्ययन के लक्ष्य से पालीताना पधार रहे हैं। उनके जनवरी के तीसरे सप्ताह के प्रारंभ में पालीताना पधारने की संभावना है।

पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा पावापुरी से छत्तीसगढ की ओर विहार कर रहे हैं। कैवल्यधाम प्रतिष्ठा की वर्षगांठ पर निश्रा प्रदान करेंगे। वहाँ से मालवा प्रदेश की ओर विहार करने की संभावना है।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा दिल्ली से विहार कर 27 नवम्बर को आगरा पधारे, वहाँ से ग्वालियर, नागपुर होते हुए चेन्नई पधार रहे हैं। वे अप्रेल महिने में चेन्नई पधारेंगे। वहाँ होने वाले प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने नई दिल्ली छोटी दादावाडी से 4 दिसम्बर को राजस्थान की ओर विहार किया है।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा ने नंदुरबार के यशस्वी एवं ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् अक्कलकुआं पधारे। जिन मंदिर दादावाडी के शिलान्यास समारोह के पश्चात् नंदुरबार होते हुए बलसाणा तीर्थ की यात्रा कर ता. 22 नवम्बर को मालेगांव पधारे। पंच दिवसीय प्रवचनश्रेणि ता. 27 को धूलिया की ओर विहार किया। वहाँ से जलगांव, अमरावती, नागपुर होते हुए रायपुर-छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बैंगलोर से विहार कर हुबली पधारे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् सांचोर होते हुए विहार कर चौहटन पधार गये हैं।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 जलगांव का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर प्रतिष्ठा, स्थानक में सार्वजनिक प्रवचन, गृहांगण पदार्पण आदि कई कार्यक्रमों के पश्चात् विहार कर धरणगांव, अमलनेर, धूलिया, मालेगांव होते हुए 8 दिसम्बर तक नाशिक पधारेंगे। कुछ समय की स्थिरता के पश्चात् दक्षिण प्रान्त की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बीजापुर में एवं पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि

ठाणा गदग में यशस्वी चातुर्मास संपन्न कर प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह हेतु विहार कर हुबली पधार गये हैं।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 बाडमेर नगर के ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् चौहटन नगर में प्रारंभ हो रहे उपधान तप में अपनी सानिध्यता प्रदान करने पधारे हैं। वहाँ से वे बाडमेर पधारेंगे, जहाँ से ता. 4 दिसम्बर 2014 को उनकी निश्रा में जैसलमेर ब्रह्मसर का पैदल संघ आयोजित होगा।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार ईडर, हिम्मतनगर होते हुए धोलका पधार रहे हैं। पौष दशमी तक वहीं बिराजेंगे।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 ने इचलकरंजी में चातुर्मास की संपन्नता एवं तत्पश्चात् श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड परिवार द्वारा आयोजित चार दिवसीय छह री पालित संघ यात्रा के आयोजन के पश्चात् कुंभोजगिरि से विहार कर जयसिंगपुर पधारे। वहाँ पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की 29वीं पुण्यतिथि के आयोजन के पश्चात् सांगली पधारे। वहाँ एक दिवसीय प्रवास के पश्चात् कुरूंदवाड, मजरेवाडी, चिकोडी, बेलगावी, धारवाड होते हुए ता. 28 नवम्बर को हुब्बल्ली में प्रवेश किया है।

ता. 6 दिसम्बर को आदिनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं छह मुमुक्षु बालिकाओं की दीक्षा के पश्चात् विहार कर गदग होते हुए कोप्पल पधारेंगे। वहाँ उनकी पावन निश्रा में चार मंगल मूर्तियों की प्रतिष्ठा 11 दिसम्बर को होगी। शाम को ही वहाँ से हॉस्पेट की ओर विहार करेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 को पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न होगा। वहाँ से विहार कर ता. 14 दिसम्बर को बल्लारी पधारेंगे। जहाँ ता. 15 को कुमारी शिल्पा बालड की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री विहार कर जनवरी के प्रारंभ में बंगलुरू पधारेंगे। तीन चार दिवसीय स्थिरता के पश्चात् ईरोड की ओर विहार करेंगे, जहाँ ता. 21 जनवरी 2015 को विमलनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

संपर्क सूत्र-
पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
C/O SANGHVI VIJAYRAJ DOSI
APANA INVESTMENT,
60 KILLARI ROAD, BANGALORE-560003 (KNTK.)
संपर्क - मुकेश- 08088210588/09784326130

जहाज मंदिर पहेली-102 का सही उत्तर

1. इच्छाकारेण - सव्वस्सवि सूत्र, अब्भुट्ठियो 2. संचालेहिं-अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र, 3. सागराओ-सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र, 4. अणुजाणह-सुगुरू वंदन सूत्र, 5. अभिथुआ-लोगस्स सूत्र, 6. नामिण-जयतिहुअण सूत्र, 7. शिवाय-नमोस्तु वर्धमानाय सूत्र, 8. बोधगाधं-संसार दावानल के स्तुति, 9. श्रावकादय:- क्षेत्र देवता की स्तुति (यासां क्षेत्र...), 10. देवसियं-देवसिय -देवसिअं आलोउं सूत्र, सव्वस्सवि, 11. उच्चासणे- अब्भुट्ठियो सूत्र 12. विराहणाए-वंदितु सूत्र (श्रावक सूत्र) इरियावहियं, 13. परपरिवाद-अठारह पाप स्थान/अतिचार, 14. कोहाए-सुगुरू वंदन सूत्र, 15. पयासयरा-लोगस्स (नामस्तव) सूत्र, 16. पारेमि-अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र, 17. सामाइयं, सामाइय-करेमि भंते सूत्र, भयवं सूत्र, 18. पुरिस-सीहाणं-नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र, 19. अणुप्पेहाए-अरिहन्त चेइयाणं सूत्र, 20. भावच्चिए-पुक्खरवदीवड्ढे सूत्र, 21. लोगनाहाणं-नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र, 22. जावणिज्जाए-खमासमण सूत्र, 23. देवसिओ-इच्छामि ठामि सूत्र, 24. सव्वसाहू- वंदित्तु सूत्र, 25. भरहेरवय-जावन्त के वि साहू, पुक्खरवरदीवड्ढे सूत्र, 26. महायस- जय महायस सूत्र, उवसग्गहरं सूत्र, 27. निजिताय-लघु शान्ति, 28. पठति, पठंति-लघु शान्ति, सद्भक्त्या, 29. सफलो, सफली-भयवं सूत्र, 30. उपाध्यायका: - अर्हन्तो भगवन्त सूत्र।

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- रिद्धि गोलछा-लालबर्रा

छह प्रेरणा पुरस्कार- पुष्पा डोसी-ब्यावर, निर्मला जैन-उदयपुर, फीणीबेन बाफना-कोटूर, दर्शन कोठारी-अजलनेर, ममता गोलछा-कोण्डागॉव, मेघा जैन-अक्कलकुवा

इनके उत्तर सही थे- साध्वी मयणरेखाश्रीजी पालीताणा, साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी जयपुर, साध्वी जयरत्नाश्रीजी बेंगलोर, विमलचंद लोढा-जयपुर, भवंरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, इन्द्रादेवी सकंलेचा-हैदराबाद, निधि पारख-धमतरी, चित्रा झाबक-बडोदरा, प्रमिला बैंगाणी-बीकानेर, कंचन बाई मालू-भाईन्दर, वनिला बोथरा-साबरमती, सुशिला कोचर-अक्कलकुवा, चन्द्रा कोचर-भाईन्दर, प्रियंका जैन-खापर, शुभि गोलेछा-लालबई, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, शान्ता चौपडा-रतलाम, सुचित्रा भंसाली-नौयडा, सरला गोलेछा-लालबर्रा, इन्दु राक्यान-दिल्ली, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, पुष्पादेवी जैन-जगदलपुर, सीमा भंडारी-ब्यावर, राजु भारती गोस्वामी-पालीताणा, कविता जैन-पालीताणा, संयुक्ता झवेरी-पालीताणा, ममता जैन-कुरिंजीपाडी, सुशीला भंडारी-कोटा, श्वेता भंडारी-बुन्दी, दीप डोसी-मदंसौर, प्रभा डोसी-मदंसौर, सुरेखा धारीवाल-कोटूर, किरण बैदमुथा-रायपुर, जेठीदेवी-फलोदी, मोना मेहता-इन्दौर, जयन्ती गोलेछा-जगदलपुर, सुशीला डागा-पाली, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, मनोहरलाल झाबख-कोटा, सीमा छाजेड-उज्जैन, राजेश मालू-सिवनी, प्रियंका संकलेचा-बिजापूर, भव्या डोसी-ब्यावर, सरसलता जैन-दिल्ली, निहाल बराडिया-जगदलपुर, संगीता बुरड-ब्यावर, संगीता गोलेछा-कोंडागॉव, जयश्री कोठारी-भाईन्दर, वीना जैन-जयपुर, सोनी बाफणा-कोटूर, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, तेजस जैन-बून्दी, माना चतुरमुथा-एवरिया रोड़, संतोष भण्डारी-कोटा, मंजू कांस्टिया-कोलकाता, मंजू सोलंकी-ब्यावर, सीमा जैन-जयपुर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, निकिता बच्छावत-फलोदी, मीना बोथरा-इचलकरंजी।

मुनि मनितप्रभसागरजी म.

जहाज मंदिर पहेली 104

प्रस्तुत पहेली में चार-चार अक्षर के शब्दों में से दो-दो शब्द ही लिखे गये हैं। शेष दो-दो शब्द को उपयुक्त स्थान पर रखिये और सम्पूर्ण शब्द का निर्माण कीजिये -

1. ——शंख	वर	जिन	2. ——त्तर
3. ——अण	अनु	सक	4. ——ग्रह
5. ——मुनि	वास	वृक्ष	6. ——गल
7. ——उपा	परि	बोध	8. ——कित
9. ——सर	दय	व्रत	10. ——धर
11. ——अनु	नाद	वीर	12. ——दित
13. ——परी	पुद्	गार	14. ——जय
15. ——प्रति	आचा	चिदा	16. ——दत्त
17. ——महा	यन	लता	18. ——भीत
19. ——गुरू	गुण	भव	20. ——वंत
21. ——नव	कार	सम	22. ——रता
23. ——प्रभा	निरा	माणु	24. ——भद्र
25. ——उदा	षह	कूल	26. ——रांग
27. ——एष	णीय	नार	28. ——किक

29. ——गिर	पुण्य	गण	30. ——हारी
31. ——प्रक	देव	वती	32. ——नंद
33. ——सूर्यो	भय	शत्रुं	34. ——वान
35. ——उप	प्रमु	अम	36. ——चक्र
37. ——महा	हरि	बलि	38. ——मय
39. ——कल्प	अलौ	रण	40. ——माणु

जहाज मन्दिर पहेली झेरॉक्स करके ही भरें व इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम :-

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जनवरी तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल फरवरी में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

नाम .....

पता .....

प्रेषक

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

आजीवन साहित्य योजना में लाभ लें–

साहित्य योजना में 51 हजार रू. की राशि अर्पण कर नये बने श्रुत संरक्षक

0 स्व. जावंतराजजी हस्तीमलजी मांगीलालजी नरसिंहमलजी गौतम विक्रम हिदान बोहरा परिवार केरिया वाले, सांचोर– मुंबई

0 मातुश्री ढेलीदेवी की स्मृति में शा. संपतराजजी लूणकरणजी समकित हिमांशु बेटा पोता माणकमलजी हीरालालजी रामजियांणी संखलेचा, बाडमेर–इचलकरंजी–मालेगांव

0 श्री घमडीरामजी प्रतापजी ललवानी, सिवाना

0 श्री मीठालालजी सौ. पुष्पादेवी पुत्र महावीरकुमार अरूणकुमार लूंकड, गढसिवाना – इचलकरंजी

0 पूजनीया साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. {बिबी म.} की पावन प्रेरणा से उनके चातुर्मास के उपलक्ष्य में श्री जैन संघ, गुलाबनगर, जोधपुर राज.

साहित्य योजना में 25 हजार रू. की राशि अर्पण कर नये बने श्रुत समाराधक

0 श्रीमती शांताबेन हरखचंदजी बोथरा, सांचोर–मुंबई

0 पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से स्थापित श्री मणिधारी महिला मंडल, इचलकरंजी

0 पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. की दीक्षा (पौष सुदि 3) के उपलक्ष्य में शा. बाबुलालजी सौ. कमलादेवी पुत्र रमेशकुमार पौत्र मंथनकुमार लूंकड, मोकलसर–इचलकरंजी

0 श्री राजस्थानी जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, इचलकरंजी

0 श्रीमती शांतिदेवी जसराजजी बालड, असाडा–इचलकरंजी

0 पूजनीया साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. {बिबी म.} की पावन प्रेरणा से उनकी 28वीं दीक्षा तिथि के उपलक्ष्य में एक गुरुभक्त

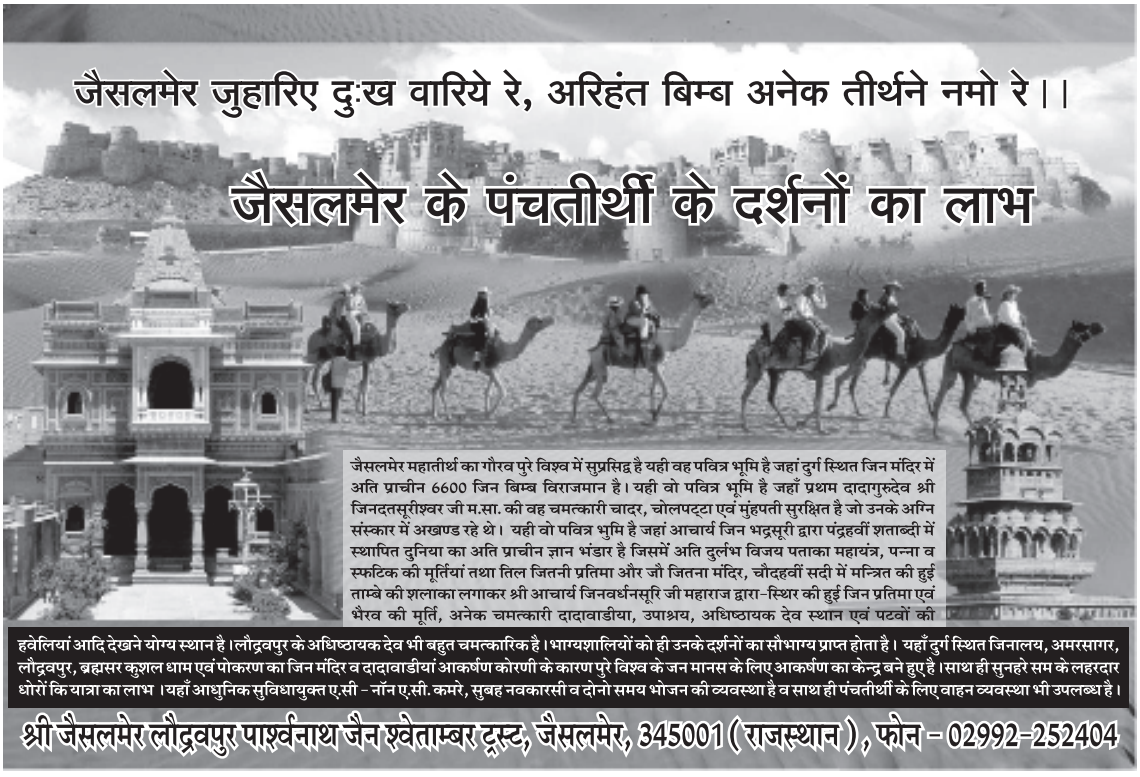

जटाशंकर की मां बहुत धार्मिक थी। जबकि पुत्र का स्वभाव बिल्कुल विपरीत था। मां के मन में आया- मुझे दान पुण्य करना है। मेरा अन्तिम समय आ गया है। उसने अपने स्वभाव के अनुसार वसीयत बनवाई। वसीयत में लिखा- मेरा बंगला बेच दिया जाये और उससे जो भी राशि प्राप्त हो, उसे मंदिर को दान कर दी जाये।

मां के स्वर्गवास के बाद वसीयत पढी गई। जटाशंकर हैरान हो गया। बंगले का मूल्य लगभग सवा करोड रूपये है। वसीयत के अनुसार बेचना तो होगा। सारा रूपया मंदिर को देना होगा।

जटाशंकर विचार में पड गया। उसने पुनः पुनः वसीयत पढी। और अचानक उसके दिमाग में तर्क पैदा हुआ। मां ने लिखा है- बंगले की राशि मंदिर को देनी है। कितनी राशि होगी, इसका कोई अनुमान नहीं किया गया है। मुझे अपनी बुद्धि का प्रयोग करना होगा।

उसने बुद्धि का उपयोग करते हुए विज्ञापन निकाला- बंगला और उसके साथ एक बिल्ली बेचनी है।

खरीददार लोग आये और मूल्य पूछा!

जटाशंकर ने कहा- बंगले का मूल्य 5 रूपये और बिल्ली का मूल्य एक करोड रूपये! शर्त है कि दोनों को साथ ही खरीदना होगा।

लोग विचार में पड गये। बंगला सिर्फ 5 रूपये का और बिल्ली एक करोड रूपये की! यह गणित समझ में नहीं आई।

पर बंगले का मूल्य तो था ही! लोगों ने सोचा- मूल्य किसका क्या रखा है, इससे क्या फर्क पडता है! बंगला कम से कम सवा करोड का है। कुल मिलाकर एक करोड में ही मिल रहा है। फायदा ही फायदा है।

एक व्यक्ति ने दिया एक करोड का चैक और बिल्ली व बंगला खरीद लिया।

जटाशंकर ने तुरंत वसीयत के अनुसार 5 रूपये मंदिर में दान किया और करोड रूपये का चेक जेब में डाल कर चलता बना।

यह स्वार्थ भरी चतुराई है। संसार के क्षेत्र में व्यक्ति इसी प्रकार चतुराई के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करता है। और कर्म बंधन करता है। चिंतन यह करना है कि हम आत्मा के क्षेत्र में... आत्म हित में चतुर कब बनेंगे!

जटाशंकर

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.

|| श्री मनमोहन पार्श्वनाथाय नमः ||
|| दादा गुरूदेव श्री जिनदत्तसूरि गुरूभ्यो नमः ||

तिरुनेलवेली (त. ना.) नगरे

नवनिर्मित श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर
के उद्घाटन एवं
श्री नवपद पट्ट की स्थापना प्रसंगे

विशिष्ट आमंत्रण

आशीर्वाद - पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.सा.

पावन निश्रा - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

कार्यक्रम

चैत्र वदि 2 शनिवार दि. 7.03.2015

श्री सिद्धचक्र महापूजन - मध्यान्ह 12.39 बजे

आयोजक एवं निमंत्रक

श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार

शा. जयन्तिलाल विमलचंद सुरेशकुमार दिनेशकुमार

रुपेशकुमार बेटा-पोता शा. छगनलालजी

चुनाजी भंसाली (मालाणी) परिवार

गोल-तिरूनेलवेली-चैन्नई

संपर्क (ऑ) 0462-233368, मो. 98431 33681 (J) 94440 35622 (V)
98430 58185 (S) 97866 55544 (M)

स्थल : श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर ट्रस्ट

तमिलसंघा स्ट्रीट, पो. तिरूनेलवेली - 627006

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

इचलकरंजी स्वर्णिम चातुर्मास

मुनि मण्डल

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. का वक्तव्य

मुमुक्षु अभिनंदन इचलकरंजी दादावाड़ी संघ द्वारा

श्री बाबुलालजी लूंकड परिवार को प्रतिमा अर्पण

पू. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म. द्वारा प्रतिमा अर्पण

साधर्मिक भक्ति लाभार्थी
श्री बाबुलालजी लूंकड
परिवार का बहुमान

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरवाँ रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408